A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 07 अगस्त, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 328, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

चल समारोह में आई झांकियों ने मनमोहा...

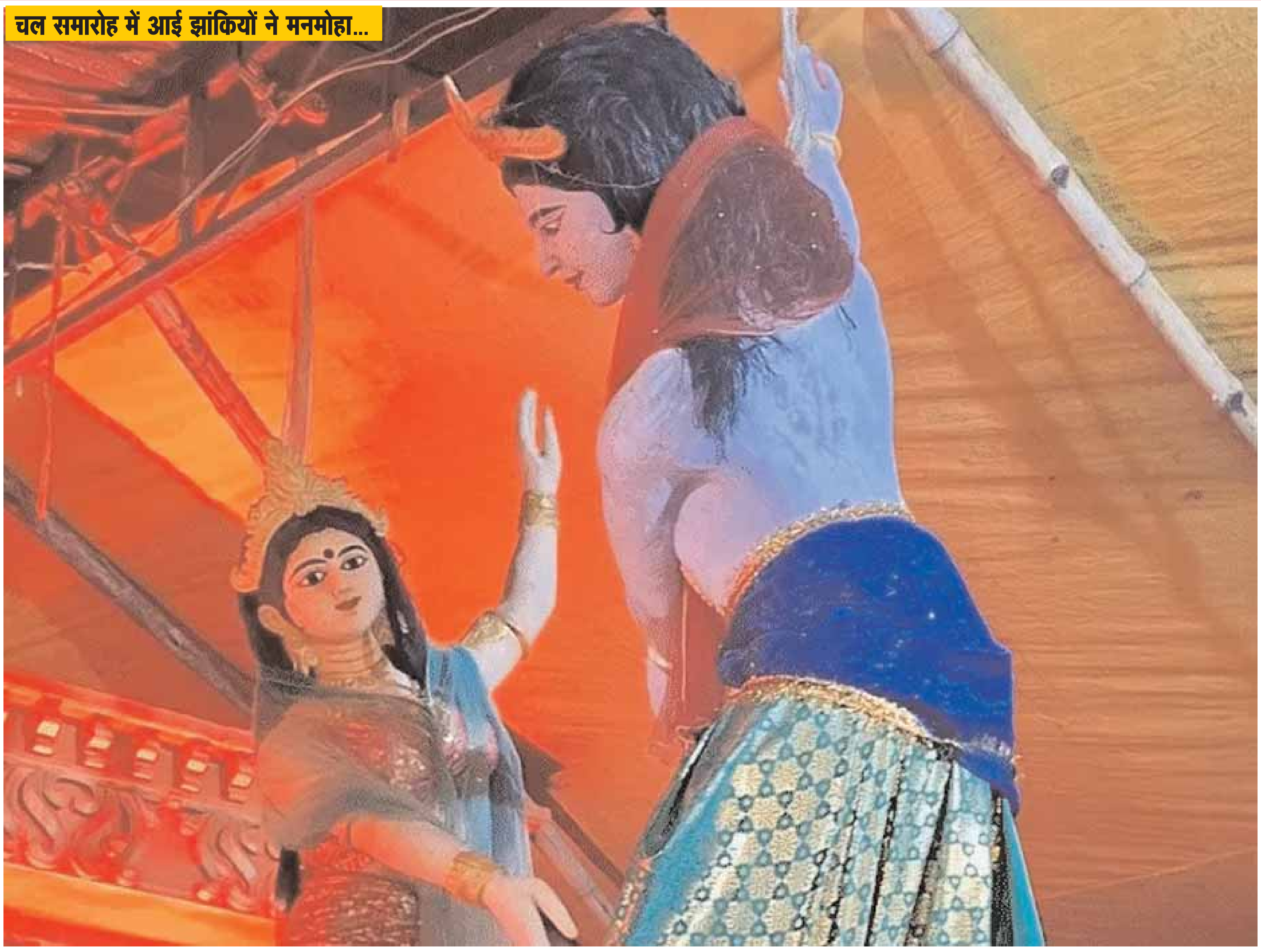

इंदौर में अनंत चतुर्दशी पर चल समारोह में आई झांकियों ने मन मोहा। इस बार 6 मिलों की 16 झांकियों के साथ ही 4 संस्थाओं की 12 अन्य झांकियां भी इसमें शामिल हुई

सुप्रभात

तुम्हें देखते हुए

घर का हर कोना तुम्हारी
मुस्कान से भर गया

पीला रंग तुम्हारे चारों ओर
आभा की तरह फैलता हुआ
मुझे लगता है – यह तुम्हारे
भीतर से निकली है रौशनी

तुम्हारे हाथों की पकड़ मे एक
अपनापन सा झलक उठा है
जैसे कह रही हो तुम –
÷थोड़ा रुक जाओ,
यहाँ मेरे पास सब सुरक्षित है।÷
तुम्हारी आधी बंद आँखों में
थोड़ा थकान का टुकड़ा है
पर उससे भी गहरी है शांति जो
मुझे हर तूफ़ान से बचाती है।

इस क्षण में देखता हूँ
जीवन की एक कविता
शब्दों से नहीं- ऐसे ही
सरल पलों से आ जाती है।

– रवींद्र स्वप्निल प्रजापति

डैमेज कंट्रोल में ट्रंप, मोदी ने भी बढ़ाया दोस्ती का हाथ

अमेरिका-भारत में संबंध सुधरने के मिलने लगे संकेत

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प शुक्रवार को भारत के खिलाफ दिए गए अपने बयान पर करीब 12 घंटों के अंदर ही बैकफुट पर चले गए। उन्होंने शाम 6-7 बजे

- **ट्रम्प बोले- भारत के साथ रिश्ते रीसेट करने को तैयार**
- **पीएम मोदी ने कहा- उनके विचारों की सराहना करता हूं**

के बीच व्हाइट हाउस में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान एक सवाल पर कहा-मैं हमेशा मोदी का दोस्त रहूंगा। भारत के साथ संबंधों को रीसेट करने के लिए हमेशा तैयार हूं। इससे पहले शुक्रवार सुबह करीब 6 बजे उन्होंने सोशल मीडिया ट्रूथ पर लिखा था,ऐसा लगता है कि हमने भारत और रूस को चीन के हाथों खो दिया है। उम्मीद है उनका भविष्य अच्छा होगा। वहीं, शनिवार को 9.45 बजे पीएम मोदी ने ट्रम्प के बयान को शेयर करते हुए एक्स पर लिखा- राष्ट्रपति ट्रम्प की भावनाओं और हमारे संबंधों को लेकर उनके विचारों की तहे दिल से सराहना करता हूं और उनका पूर्ण समर्थन करता हूं। उन्होंने कहा- भारत-अमेरिका के बीच एक पॉजीटिव और दूरदर्शी रणनीतिक साझेदारी है। प्रेस ब्रीफिंग में ट्रम्प ने भारत और दूसरे देशों के साथ चल रही व्यापार बातचीत को अच्छा बताया, लेकिन यूरोपीय संघ के गूगल पर 3.5 अरब डॉलर का जुर्माना लगाने पर नाराजगी जताई।

ब्रिक्स की वर्चुअल समिट में शामिल नहीं होंगे मोदी

अब जयशंकर भाग लेंगे, अमेरिका ने टैरिफ हटाने के लिए छोड़ने की शर्त रखी थी

नई दिल्ली (एजेंसी)। ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डा सिल्वा की ओर से बुलाए गए 8 सितंबर को ब्रिक्स नेताओं के वर्चुअल समिट में भारत का प्रतिनिधित्व पीएम मोदी की जगह विदेश मंत्री एस जयशंकर करेंगे। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को बयान जारी कर इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा- भारत की ओर से इसमें विदेश मंत्री भाग लेंगे। यह सम्मेलन अमेरिका के लगाए गए टैरिफ से निपटने के तरीकों और बहुपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने पर चर्चा करेगा।

किसानों के सुख-दुख में हमेशा साथ है सरकार

अन्नदाताओं की मुस्कान ही सरकार की ताकत: मुख्यमंत्री डॉ यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन से प्रदेश के 11 जिलों के 17500 किसानों को 20 करोड़ 60 लाख रुपए बाढ़ राहत राशि का वितरण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बीते दिनों प्रदेश में अतिवृष्टि (प्राकृतिक आपदा) के कारण फसलों को हुई क्षति

- **मुख्यमंत्री ने आपदा पीड़ित किसानों के खाते में 20 करोड़ 60 लाख भेजे**
- **केले के तने के रेशे से बनेगा कपड़ा, धार में लगेगा कारखाना; ग्रामीणों से की बात**

के मुआवजे के रूप में प्रभावित किसानों के खातों में सिंगल क्लिक के जरिए इस राहत राशि का हस्तांतरण किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रभावित किसानों से वर्चुअल संवाद करते हुए कहा है कि प्रदेश के अन्नदाताओं की खुशहाली और उनकी मुस्कान ही हमारी सरकार की ताकत है। मौसम की मार में हम किसानों को बेसहारा नहीं रहने देंगे। उन्होंने कहा कि जो होना था, हो चुका। हम अपने किसानों को उनकी फसल क्षति का समुचित मुआवजा दे रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अन्नदाताओं को भरोसा दिलाया कि प्रदेश का कोई भी किसान मौसम की मार पर बेसहारा नहीं रहेगा। हमारी सरकार सुख-दुख सहित हर परिस्थिति में किसानों के साथ है। सबको राहत राशि उपलब्ध कराई जाएगी।

कार्यक्रम में राजस्व मंत्री श्री करण सिंह वर्मा, मुख्यमंत्री कार्यालय में अपर सचिव श्री आलोक सिंह, आयुक्त राजस्व श्रीमती अनुभा श्रीवास्तव सहित अन्य विभागीय वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

मुख्यमंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए जिलों में अतिवृष्टि से प्रभावित किसानों से आत्मीय संवाद कर उनकी कुशल-क्षेम लेकर फसल क्षति और वर्तमान स्थिति की जानकारी भी ली।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शिवपुरी के किसान श्री राघवेन्द्र और श्री जगत पाल, दमोह के श्री सरदार सिंह और श्री संग्राम सिंह, अशोकनगर के श्री प्रदीप सिंह रघुवंशी और कल्याण सिंह, धार के श्री ओमप्रकाश और श्री जगदीश, छतरपुर के श्री रमेश और श्री प्रकाश, रायसेन के श्री अरविंद और श्री अमर सिंह से वर्चुअली संवाद किया। दमोह जिले में पर्यटन एवं संस्कृति राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी भी उपस्थित रहे। प्रभावित किसानों ने सरकार द्वारा त्वरित रूप से बाढ़ आपदा राहत राशि प्रदान करने पर मुख्यमंत्री डॉ यादव का आभार व्यक्त किया।

उल्लेखनीय है कि इससे पहले मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा बीते अगस्त महीने में प्राकृतिक आपदा, अतिवृष्टि एवं बाढ़ से हुई विभिन्न क्षतियों से प्रभावित परिवारों की पीड़ा को ध्यान में रखते हुए 24 हजार 884 प्रभावितों को 30 करोड़ रुपये से अधिक की राहत राशि का वितरण किया था।

राजस्व आयुक्त श्रीमती श्रीवास्तव ने बताया कि प्राकृतिक प्रकोपों से प्रभावित परिवारों को तत्काल आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए राजस्व पुस्तक में प्रावधान किए गए हैं, जिससे प्रभावित परिवार अपनी आजीविका को पुनर्स्थापित कर सकें। इस मानसून सीजन में प्रदेश में 1031.2 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य से 25 प्रतिशत अधिक है। सर्वाधिक वर्षा गुना में 1603 मिमी,श्योपुर में 1418.6 मिमी, मंडला में 1417.4 मिमी,रायसेन में 1403.2 मिमी और शिवपुरी में 1354.1 मिमी में हुई है।वर्ष 2025-26 में प्राकृतिक आपदाओं से हुए नुकसान के लिए विभिन्न मदों में अबतक कुल 188.52 करोड़ रुपये की राहत राशि वितरित की जा चुकी है।

लाल किला परिसर से 1 करोड़ के कलश चोरी

सोने पर हीरे-पन्ने जड़े थे, जैन समारोह की घटना, लोकसभा स्पीकर भी आए थे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के लाल किला परिसर में जैन धार्मिक आयोजन के दौरान दो स्वर्ण कलश और 1.5 करोड़ रुपए के सामान चोरी हो गए। घटना बुधवार, 3 सितंबर की है। इसका सीसीटीवी शनिवार को सामने आया है। इसमें एक चोर जैन पुजारी के वेश में आया और कीमती सामान से भरा बैग लेकर चला गया। पुलिस ने कहा है कि संदिग्ध की पहचान कर ली गई है और उसे जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा। एक स्वर्ण कलश पर लगभग 760 ग्राम का सोने का नारियल लगा था। 115 ग्राम के दूसरे कलश पर हीरे, पन्ने और माणिक जड़े थे। इन्हें जैन धर्म में पवित्र माना जाता है और ये अनुष्ठानों में काम आते हैं। दरअसल, लाल किला परिसर के 15 अगस्त पार्क में 10 दिनों का धार्मिक आयोजन दशलक्षण महापर्व आयोजित किया गया था। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, स्वर्ण कलश और कीमती सामान बिजनेसमैन सुधीर जैन के स्वामित्व में था। वे अनुष्ठानों के लिए हर दिन ये कीमती सामान लाते थे। पिछले बुधवार भी वे अनुष्ठान के लिए कलश लाए थे। कार्यक्रम में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला भी शामिल हुए थे। ओम बिरला के स्वागत की अफरातफरी के बीच कलश मंच से गायब हो गया। हालांकि, यह पहली बार नहीं है जब लाल किला में सुरक्षा में सेंध का मामला सामने आया है। इससे पहले, 2 अगस्त को लाल किले की सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मी एक डमी बम का पता नहीं लगा पाए थे। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रम को लेकर स्पेशल सेल की एक टीम 2 अगस्त को सादे कपड़ों में मॉक ड्रिल के लिए पहुंची थी। वे अपने साथ एक नकली बम लेकर लाल किले में दाखिल हुए। उस समय, लाल किले की सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मी बम डिटेक्ट नहीं कर सके। पुलिसकर्मियों को सुरक्षा में लापरवाही बरतने के कारण निलंबित कर दिया गया। लाल किले पर स्वतंत्रता दिवस का मुख्य समारोह आयोजित होता है। इसमें पीएम मोदी देश को संबोधित करते हैं। 4 अगस्त को महिला कांग्रेस सांसद से चेन छीनी थी हालांकि, यह पहली बार नहीं है जब सुरक्षा में सेंध लगी है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 35 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 07 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

चहुंओर 'गणपति अपने गांव चले' की गूंज

● विदा हुए बप्पा, भाव विभोर नजर आए भक्त ● देशभर में गणेश मूर्तियों का हो गया विसर्जन

नई दिल्ली/मुंबई (एजेंसी)। देशभर में गणेश उत्सव का शनिवार को अंतिम दिन था। अनंत चतुर्दशी पर भगवान गणेश की मूर्ति का विसर्जन सुबह से ही शुरू हो गया। मुंबई में करीब 1.80 लाख से ज्यादा मूर्तियां विसर्जित होने वाली हैं जो रविवार तक चलता रहेगा।

इनमें 6,500 गणेश पंडाल और 1.75 लाख घरेलू मूर्तियां हैं। कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए मुंबई में 21,000 पुलिसकर्मी तैनात किए गए हैं। पुलिस पहली बार रूट मैनेजमेंट के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) का इस्तेमाल किया गया। इसके लिए गिरगांव चौपाटी पर एक एआई बेस्ड कंट्रोल रूम बनाया गया है। प्रमुख गणपति कमेटी को क्यूआर कोड जारी किए गए हैं और विसर्जन जुलूस में शामिल होने वाले वाहनों के लिए स्टिकर भी लगाए गए हैं। इससे पुलिस को वाहनों का पता लगाने, भीड़ पर नजर रखने और उन्हें कंट्रोल करने में मदद मिलेगी ताकि ट्रैफिक डायवर्जन के लिए इन्हें रियल टाइम में मैनेज किया जा सके। गुजरात में सूरत के एसएसपी राजेश परमार ने बताया कि गणपति विसर्जन में लगभग 100 टन वजन वाली 13 बड़ी क्रेन का इस्तेमाल किया जा रहा है। अब तक 400 मूर्तियों का विसर्जन हो चुका है। इस बार लगभग 3500 से 4500 मूर्तियों का विसर्जन होने की उम्मीद है। मुंबई के सबसे प्रसिद्ध गणेश पंडाल लालबागचा राजा की शोभायात्रा शुरू हो गई है। प्रतिमा को परंपरा के अनुसार गिरगांव चौपाटी ले जाया गया, जहां उसका विसर्जन किया गया है। इसी के साथ गणेशोत्सव का समापन हो गया है। हैदराबाद में 69 फीट ऊंची खैरताबाद गणेश प्रतिमा का भव्य विसर्जन जुलूस शनिवार सुबह शुरू हुआ है। इसमें हजारों श्रद्धालु शामिल हुए। ढोल-नगाड़ों और जयकारों के बीच बप्पा को विदाई दी गई। प्रतिमा को विशेष ट्रक पर ले जाया गया।

● तेलंगाना में 69 फीट ऊंची प्रतिमा की गई विसर्जित

5 साल में एक करोड़ युवाओं को रोजगार-नौकरी का वादा

● चुनाव से पहले बिहार सीएम की भोजपुर को 740 करोड़ की सौगात

भोजपुर (एजेंसी)। भोजपुर जिले को बिहार विधानसभा चुनाव से पहले बड़ी सौगात मिली है। सीएम नीतिश कुमार ने 740 करोड़ 38 लाख की लागत से कुल 432 योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इस दौरान जवइनिया गांव के 187 बाढ़ पीड़ितों को 2 करोड़ 24 लाख 40 हजार रुपए राहत के तौर पर दी गई। कार्यक्रम में सीएम के साथ डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी भी मौजूद रहे। जगदीशपुर खेल मैदान में आयोजित एनडीए संवाद कार्यक्रम में सीएम ने बड़ी घोषणा की है।

रेलवे से जुड़ा मिजोरम, म्यांमार बॉर्डर तक बढ़ेगा रेल मार्ग

● आइजोल को पहली बार भारतीय रेल नेटवर्कसे मिला सीधा कनेक्शन, पीएम करेंगे उद्घाटन

आइजोल (एजेंसी)। मिजोरम की राजधानी आइजोल पहली बार भारतीय रेलवे के नेटवर्क से जुड़ गई है। अब यह रेल लाइन आगे बढ़कर म्यांमार बॉर्डर तक जाएगी। जिसका सर्वे किया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सितंबर के तीसरे सप्ताह में 8071 करोड़ रुपए की लागत से बनी 51.38 किलोमीटर लंबी रेल परियोजना का उद्घाटन करेंगे। यह न केवल मिजोरम के लिए ऐतिहासिक पल है बल्कि देश के लिए भी।

हजरतबल दरगाह में अशोक चिन्ह पर बढ़ गया विवाद

● नमाज के बाद लोगों ने शिलापट्ट तोड़कर राष्ट्रीय प्रतीक हटाया

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में हजरतबल दरगाह में शुक्रवार को ईद-ए-मिलाद के मौके पर अशोक स्तंभ वाली एक नवनिर्मित शिलापट्ट को कुछ लोगों ने तोड़ दिया। जुमे की नमाज के बाद भीड़ शिलापट्ट के पास जमा हो गई और वक्फ बोर्ड के खिलाफ नारे लगाए और पत्थरबाजी की। इस घटना को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। सदियों से, दरगाह हजरतबल जम्मू-कश्मीर में मुस्लिमों के लिए सबसे पवित्र स्थल रहा है क्योंकि यहां पैगंबर मोहम्मद की निशानियां रखी हैं। इस हफ्ते की शुरुआत में, वक्फ बोर्ड ने करोड़ों रुपए खर्च करके हजरतबल दरगाह का रिनोवेशन करके उद्घाटन किया था।

पावागढ़ में गुड्स रोपवे टूटा, 6 लोगों की मौत

गुजरात के पावागढ़ शक्तिपीठ में हुआ बड़ा हादसा

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात के पंचमहाल जिले के पावागढ़ के महाकाली मंदिर शक्तिपीठ में शनिवार को गुड्स (सामान ले जाने वाले) रोपवे के टूटने से 6 लोगों की मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम तुरंत मौके पर पहुंच गई। रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। जानकारी के मुताबिक, रोपवे का तार टूटने की वजह से ट्रॉली ऊंचाई से नीचे जमीन में गिर गई। हादसे में कई लोगों के घायल होने की खबर भी है। वहीं, मृतकों में 2 लिफ्ट ऑपरेटर, 2 मजदूर और अन्य दो लोग शामिल हैं। शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए अस्पताल भेजा गया है। पावागढ़ में को महाकाली मंदिर तक जाने के लिए दो अलग-अलग रोपवे बने हैं। एक रोपवे श्रद्धालुओं लाने-ले जाने के लिए है, जबकि दूसरा रोपवे केवल सामान और निर्माण सामग्री ढोने के लिए तैयार किया गया है।

● मरने वालों में लिफ्ट ऑपरेटर और मजदूर शामिल

800 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित है शक्तिपीठ

पावागढ़ मंदिर, मां महाकाली को समर्पित एक प्राचीन और प्रसिद्ध शक्ति पीठ है। यह मंदिर समुद्र तल से करीब 800 मीटर ऊंची पावागढ़ पहाड़ी पर स्थित है। माना जाता है कि यहां सती माता का दाहिना पैर गिरा था। शारदीय नवरात्रि सहित अन्य पर्वों पर लाखों श्रद्धालु यहां दर्शन के लिए पहुंचते हैं, हालांकि रेगुलर भी भक्तों का आना लगा रहता है।

अरुणाचल प्रदेश में ग्लेशियर पिघलने से सैलाब का खतरा

● हिमाचल समेत कुछ राज्यों में भी बढ़ रहा झीलों का आकार

ईटानगर (एजेंसी)। अरुणाचल प्रदेश में ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, जिसके कारण राज्य पर खतरा मंडरा रहा है। ग्लेशियर पिघलने से झीलों में ज्यादा पानी जमा हो रहा है। ऐसे में झील फटने या बाढ़ आने से कई इलाकों में भारी तबाही मच सकती है। हाल ही एक रिपोर्ट के अनुसार, पूर्वी हिमालय में स्थित कुछ ग्लेशियर 1.5 मीटर की तेजी से पिघल रहे हैं। सेंटर फॉर अर्थ साइंस एंड हिमालय स्टडीज ने यह खुलासा किया है। एसईसीएन्डएचसी पिछले कुछ समय से तवांग के गोरीचेन पर्वत में स्थित खांगरी ग्लेशियर पर नजर रखे हुए हैं।

श्रीनगर की हजरतबल दरगाह में अशोक चिन्ह पर विवाद

● भीड़ ने शिलापट्ट तोड़कर राष्ट्रीय प्रतीक हटाया, मच गया बवाल

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में हजरतबल दरगाह में शुक्रवार को ईद-ए-मिलाद के मौके पर अशोक स्तंभ वाली एक नवनिर्मित शिलापट्ट को कुछ लोगों ने तोड़ दिया। जुमे की नमाज के बाद भीड़ शिलापट्ट के पास जमा हो गई और वक्फ बोर्ड के खिलाफ नारे लगाए और पत्थरबाजी की। इस घटना को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। सदियों से, दरगाह हजरतबल जम्मू-कश्मीर में मुस्लिमों के लिए सबसे पवित्र स्थल रहा है क्योंकि यहां पैगंबर मोहम्मद की निशानियां रखी हैं।

भारत ने खींचा सैन्य महाशक्ति बनने का खाका

● जल..थल और नभ में तीनों क्षेत्र में मजबूत होगी हमारी सेना

● हाई एनर्जी लेजर वीपन और स्टील्थ ड्रोन से किया जाएगा लैस ● तीसरा परमाणु चालित विमान वाहक पोत नौसेना में होगा शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने अगले 15 साल में बड़ी सैन्य महाशक्ति बनने का रोडमैप तैयार कर लिया है। सरकार चाहती है कि सेना को ताकत के साथ-साथ तकनीक में भी आगे रखा जाए ताकि अंतरिक्ष में भी युद्ध लड़ना पड़े तो सेना आगे रहे। इसके लिए रक्षा मंत्रालय जल, थल और नभ, तीनों सेनाओं के कायाकल्प पर काम कर रहा है। सरकार का सबसे ज्यादा फोकस एआई-संचालित हथियार और डायरेक्ट एनर्जी लेजर वीपन के साथ-साथ स्टील्थ ड्रोन पर भी है। इनको ही भविष्य का मारक हथियार माना जा रहा है। ऑपरेशन सिंदूर के जरिये पूरी दुनिया को अपनी ताकत से परिचित कराने के चार महीने बाद सरकार न

जो रोडमैप तैयार किया है, उसमें परमाणु ऊर्जा से चलने वाले युद्धपोत, अगली पीढ़ी के युद्धक टैंक, हाइपरसोनिक मिसाइल और अंतरिक्ष-आधारित युद्ध तकनीक पर काम किया जाएगा। हिंद महासागर में नौसेना की ताकत बढ़ाने के लिए देश में जल्द परमाणु ऊर्जा से चलनेवाला विमान वाहक पोत तैयार किया जाएगा।

भविष्य में ऐसे 10 युद्धपोत तैयार करने की योजना है। इन पर देश में ही तैयार लड़ाकू विमान तैनात किए जाएंगे। देश में अभी दो विमान वाहक पोत हैं, जिसमें एक रूस का है और दूसरा स्वदेशी युद्धपोत है। युद्धपोतों पर इलेक्ट्रोमैग्नेटिक एयरक्राफ्ट लांच सिस्टम लगाया जाएगा।

हाईटेक युद्ध लड़ने की सशस्त्र सेना की है एक बड़ी योजना

योजना के अनुसार सशस्त्र सेनाओं को स्टील्थ ड्रोन की जरूरत बढ़ेगी। ये ड्रोन 15 किलोमीटर की ऊंचाई पर सुपरसोनिक स्पीड से उड़ सकेंगे और भारी हथियार लेकर हवाई हमले भी कर सकेंगे। सेनाओं को साइबर सिक्योरिटी से लैस किया जाएगा ताकि सेटेलाइट को हैकिंग से बचाया जा सके। साथ ही सेटेलाइट से संचालित लेजर रेंज फाइंडर और टोही सेटेलाइट की सुविधा भी मिलेगी।

बाढ़ ने मिटा दी भारत-पाकिस्तान की सीमा !

खाली पड़े हैं पोस्ट, बह गई 30 किलोमीटर की बाड़

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर और पंजाब की नदियां इन दिनों उफान पर हैं। पानी की ताकत के सामने इंसानों की बनाई सरहदें भी टिक नहीं पाईं। पंजाब में उग्र रूप धारण करने वाली रावी नदी ने भारत और पाकिस्तान की सीमा पर करीब 30 किलोमीटर की तारबंदी ही खत्म कर दी। खंभे और तार भीषण बाढ़ में बह गए। वहीं दोनों ही तरफ दर्जनों चेकपोस्ट खाली पड़े हैं। बाढ़ को देखते हुए बीएसएफ ने भी अपने चेकपोस्ट खाली कर दिए थे और सारा साजो सामान भी निकाल लिया गया था। रिपोर्ट्स के मुताबिक ड्रग्स स्मग्लर्स इस बाढ़ का भी फायदा उठाने में लगे हैं। अधिकारियों ने बताया कि कई तस्करों ने सीमा को लांघने की कोशिश की थी, हालांकि वे बीएसएफ की नजर में आ गए और पकड़े गए।

लिपुलेख दर्रा विवाद में नहीं पड़ेगा चीन, किया किनारा

बीजिंग/काठमांडू (एजेंसी)। चीन ने भारत और नेपाल के बीच लिपुलेख विवाद में पड़ने से इनकार कर दिया है। नेपाल के विदेश सचिव अमृत बहादुर राय के मुताबिक जिनपिंग ने कहा है कि लिपुलेख एक पारंपरिक दर्रा है। चीन नेपाल के दावे का सम्मान करता है, लेकिन यह विवाद भारत और नेपाल का द्विपक्षीय मसला है। इसे दोनों देशों को आपसी बातचीत से सुलझाना चाहिए। नेपाली पीएम केपी शर्मा ओली 31 अगस्त से 1 सितंबर तक एससीओ समिट में शामिल होने चीन पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने चीनी राष्ट्रपति के सामने लिपुलेख का मुद्दा उठाया था। ओली ने कहा था कि यह इलाका नेपाल का हिस्सा है और भारत-चीन के बीच हुए हालिया सहमति पर नेपाल ने आपत्ति दर्ज कराई है। दरअसल, 19 अगस्त को भारत और चीन ने लिपुलेख पास को ट्रेड रूट के तौर पर फिर से खोलने का फैसला किया था। इस पर नेपाल ने विरोध जताया था।

● नेपाली पीएम ओली ने उठाया मुद्दा, जिनपिंग बोले-आपका आपसी मामला

अपनी वायुसेना अब और ज्यादा हो जाएगी घातक

नई दिल्ली (एजेंसी)। लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट एमके 1ए के लिए दूसरा सेंटर फ्यूजलेज असेंबली हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड को सौंप दिया गया है। एलसीए एमके 1ए एक अपडेटेड, मल्टी-रोल फाइटर जेट है जो भारतीय वायुसेना के पुराने मिग-21 की जगह लेगा। भारतीय प्राइवेट कंपनी वीईएम टेक्नोलॉजीज ने शुक्रवार को दूसरा सेंटर फ्यूजलेज असेंबली एचएएल को दी। इससे पहले, लार्सन एंड टुब्रो ने कोयंबटूर में एलसीए एमके 1ए के लिए पहला विंग असेंबली सेट एचएएल को सौंपा था। रक्षा मंत्रालय के बयान के मुताबिक, इस इवेंट में रक्षा उत्पादन सचिव संजीव कुमार वर्चुअली शामिल हुए। एचएएल की ओर से जनरल मैनेजर (एलसीए तेजस डिवीजन) एम अब्दुल सलाम ने एल एन्ड टी की प्रिसिजन मैन्युफैक्चरिंग एंड सिस्टम्स कॉम्प्लेक्स यूनिट से असेंबली ली। रक्षा उत्पादन सचिव ने एचएएल और एल एन्ड टी की आत्मनिर्भरता की दिशा में की गई कोशिशों की तारीफ की। उन्होंने कहा कि एचएएल निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ मिलकर काम कर रही है, उन्हें बढ़ावा दे रही है और उनकी क्षमताओं को निखार रही है। उन्होंने एलसीए तेजस के प्रोडक्शन टारगेट को पूरा करने का भरोसा जताया और विदेशी निर्भरता कम करने पर ध्यान देने को कहा।

● लड़ाकू विमान तेजस मार्क 1ए का रास्ता साफ

● एचएएल ने उठाया आत्मनिर्भरता की ओर कदम

नगर निगम वाटर रिचार्जिंग भूला, बढ़ेगा संकट

इंदौर। गर्मी के मौसम में जल संकट से निपटने के लिए वाटर रिचार्जिंग पर जोर देने वाला नगर निगम बारिश शुरू होते ही इस मुद्दे को भूल गया। निगम द्वारा तय किए गए वाटर रिचार्जिंग सेंटर बनाने का लक्ष्य इस बार भी अधूरा रह गया। जानकारी के मुताबिक 50 हजार सेंटर का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन अब तक 25 हजार का आंकड़ा भी पूरा नहीं हो सका। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि बारिश के पानी को अभी नहीं सहेजा गया तो आने वाले दिनों में शहर को गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ सकता है। निगम ने गर्मी में वाटर रिचार्जिंग के लिए अभियान तो चलाया, लेकिन उसकी गंभीरता बरकरार नहीं रख सका। सॉफ्ट और अन्य साधन, जिन पर लोकधन खर्च कर गर्मियों में लगाए गए थे, उन पर भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में मंदिर, मस्जिद और बड़े प्रतिष्ठानों ने स्वयं खर्च कर वाटर रिचार्जिंग की व्यवस्था की थी। यदि निगम समय रहते वाटर रिचार्जिंग पर ध्यान नहीं देगा, तो भू-जल स्तर और नीचे जाने से बड़ी समस्या खड़ी हो सकती है।

कॉलेजों की मान्यता पर सख्ती की जाएगी

इंदौर। उच्च शिक्षा विभाग ने स्पष्ट कर दिया है कि अगले वर्ष कॉलेजों की संबद्धता और मान्यता रिन्यू करने में कोई लापरवाही नहीं होगी। इस बार कॉलेजों को छात्रों को दी जाने वाली सुविधाओं और तय मानकों पर खरा उतरना ही होगा, तभी उन्हें एनओसी मिलेगी। विभाग दीपावली के बाद निरीक्षण शुरू करेगा और रिपोर्ट के आधार पर ही निर्णय लिया जाएगा। जानकारी के अनुसार निरीक्षण में कॉलेजों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पर्याप्त फैकल्टी, टॉयलेट, दिव्यांग छात्रों के लिए रैंप, भवन व भूमि जैसी सुविधाओं का आकलन किया जाएगा। जो कॉलेज इन मानकों को पूरा नहीं कर पाएंगे, उनकी एनओसी रोकी जाएगी। विभाग ने पिछले साल इस प्रक्रिया को ट्रायल के रूप में लागू किया था, लेकिन इस बार इसे पूरी सख्ती से लागू करने की तैयारी है। नए कॉलेजों को भी इसी प्रक्रिया से गुजरना होगा। पहले एनओसी सिर्फ ऑनलाइन आवेदन और दस्तावेजों के आधार पर जारी होती थी, लेकिन अब जिला प्रशासन और प्रोफेसरों की संयुक्त टीम मौके पर जाकर निरीक्षण करेगी। इसी रिपोर्ट पर आगे की प्रक्रिया आगे बढ़ेगी।

पेस्ट कंट्रोल कंपनी का कॉन्ट्रैक्ट समाप्त

इंदौर। एमवाय अस्पताल में चूहों के काटने से दो बच्चों की मौत के बाद कठोर कदम उठाए गए हैं। एमजीएम मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ अरविंद घनघोरिया ने मामले में कड़ा रुख अपनाते हुए पेस्ट कंट्रोल कंपनी एंजिल्स (एंजोलिना) का ठेकेदार रद्द कर दिया है। साथ ही अन्य कड़े कदम भी उठाए गए हैं। एमजीएम मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. अरविंद घनघोरिया ने बताया कि एंजिल कंपनी का पेस्ट कंट्रोल कॉन्ट्रैक्ट समाप्त कर दिया गया है। अब एमवाय अस्पताल के सुधार की प्रक्रिया शुरू करेंगे। इस प्रक्रिया में चूहों को स्थायी रूप से खत्म करने के लिए नए प्रावधान किए जाएंगे। साथ ही, अतिरिक्त इलेक्ट्रिक वर्क, सफाई, मरम्मत और अन्य सुधार कार्य भी होंगे। आर्किटेक्ट की टीम अस्पताल में कई बदलाव करेगी। इनमें जगह का कुशल उपयोग, मरीजों के प्रवाह में सुधार, संक्रमण रोकने के उपाय, आराम और सुविधा में वृद्धि, नवीनतम तकनीक का समावेश, सुरक्षा मानकों में सुधार और अन्य कई उपाय शामिल किए जाएंगे।

जनपद पंचायत सीईओ से मारपीट का विरोध

इंदौर। जनपद पंचायत डॉ अंबेडकर नगर (महू) के मुख्य कार्यपालन अधिकारी पंकज दरोठिया के साथ हुई मारपीट की घटना को लेकर पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारी-कर्मचारियों ने कलेक्टर कार्यालय पर ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि 3 सितम्बर की शाम 4 बजे सीईओ दरोठिया के कक्ष में दीपक तिवारी, उमेश ओसारी (जनपद सदस्य), शिव दुबे (सरपंच, ग्राम पंचायत कालाकुण्ड) एवं उनके साथियों ने जबरन घुसकर मारपीट की तथा शासकीय कार्य में बाधा उत्पन्न की। कर्मचारियों ने इस घटना को निंदनीय बताते हुए कहा कि जब उच्च अधिकारियों पर ही कार्यालय में हमला हो सकता है तो अन्य कर्मचारियों की सुरक्षा गंभीर संकट में है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने चेतावनी दी है कि जब तक दोषियों पर कठोर कार्रवाई नहीं होती और भविष्य में पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जाती, तब तक शासकीय कार्य का बहिष्कार जारी रहेगा। यदि शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई तो पूरे जिले की ग्राम पंचायतों और जनपद पंचायतों में तालाबंदी कर अनिश्चितकालीन हड़ताल की जाएगी।

राख परिवहन के लाखों रूपए का भुगतान नही, चेक भी बाउंस हुआ

● गुजरात की कंपनी पर केस दर्ज, मामले की जांच शुरू

इंदौर। बाणगंगा इलाके में एक फर्म के मालिक ने गुजरात की कंपनी के खिलाफ लाखों की धोखाधड़ी का मामला दर्ज कराया। शिकायत के अनुसार, गुजरात की कंपनी राख का परिवहन करती है और इसके लिए जेसीबी मशीन की मदद ली गई थी। एग्रीमेंट के तहत माल गुजरात की कंपनी को भेजा गया, लेकिन भुगतान में कंपनी आनाकानी करती रही। बाणगंगा पुलिस के अनुसार, सतीश जायसवाल निवासी बरोली ने प्रमोद सिंह बोराना, प्रोपराइटर राज कार्टिंग सोमनाथ सोसायटी, सूरत के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज कराया है। सतीश ने बताया कि उनकी फर्म मोहक इंटरप्राइजेस द्वारा सितंबर 2024 से नवंबर 2024 तक अमरावती, महाराष्ट्र में राख का परिवहन किया गया। इस दौरान करीब 12 गाड़ियां और एक पोकलेन मशीन लगी। पूरे काम का भुगतान करीब 49 लाख रुपए था। इसमें डीजल का भुगतान राज कार्टिंग ने किया, जिसकी राशि लगभग 20 लाख 60 हजार रुपए थी। बाकी बकाया 28 लाख 51 हजार रुपए में से, कंपनी ने कुछ भुगतान 14 लाख 75 हजार रुपए किया। इसके बाद 18 लाख 76 हजार रुपए का भुगतान बकाया रह गया। सतीश ने कई बार भुगतान की मांग की, लेकिन प्रमोद बोराना बार-बार भुगतान टालते रहे। बाद में उन्होंने एचडीएफसी बैंक के एक अकाउंट का चेक दिया, जो मार्च 2025 में जमा करना था। लेकिन जब चेक जमा किया गया, तो पता चला कि अकाउंट महीनों पहले बंद हो चुका था। इसके बाद प्रमोद से बात करने पर उन्होंने न केवल जवाब देना बंद कर दिया, बल्कि जान से मारने की धमकी भी दी। पीड़ित ने बाणगंगा पुलिस को सभी व्यापार संबंधी दस्तावेज सौंपे। शुक्रवार को पुलिस ने मामले में एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

शिलांग पुलिस ने राजा हत्याकांड में 790 पेज की चार्जशीट दाखिल की, सोनम मुख्य आरोपी

प्रेमी राज कुशवाहा और तीन अन्य आरोपी बनाए गए, 3 की जांच रिपोर्ट पेंडिंग

इंदौर। राजा रघुवंशी हत्याकांड में विस्तृत जांच के बाद मेघालय की शिलांग पुलिस ने 790 पेज का आरोप पत्र दाखिल कर दिया। इस आरोप पत्र में राजा की पत्नी सोनम रघुवंशी को मुख्य आरोपी बनाया गया है। इसके अलावा सोनम के प्रेमी राज कुशवाहा और उसके तीन साथियों को भी हत्या का आरोपी बनाया गया। शिलांग पुलिस ने एक बयान में कहा कि इंदौर के व्यवसायी की हत्या के मामले में सोहरा उप-मंडल के प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में 790 पृष्ठों का आरोपपत्र दाखिल किया गया। फोरेंसिक रिपोर्ट आने के बाद तीन और सह-आरोपियों के खिलाफ भी पूरक आरोप पत्र दाखिल किया जाएगा। इन तीन सह-आरोपियों में प्रॉपर्टी डीलर सिलोम जेम्स, लोकेंद्र तोमर, उस इमारत का मालिक जहां सोनम अपराध करने के बाद छिपी थी, और इलाके के सुरक्षा गार्ड बलबीर अहिरवार शामिल हैं। **पांचों**

आरोपी पुलिस हिरासत में- नराजा रघुवंशी हत्याकांड के सभी पांचों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया था और तभी से वे न्यायिक हिरासत में हैं। सोनम और राज के अलावा, आकाश राजपूत, आनंद कुर्मी और विशाल सिंह चौहान पर राजा रघुवंशी की हत्या का आरोप है। 23 मई को अपने हनीमून के दौरान सोनम ने अन्य आरोपियों के साथ मिलकर अपने पति राजा रघुवंशी की निर्मम तरीके से हत्या कर दी थी। सभी आरोपियों पर भारतीय न्याय संहिता के तहत हत्या की धारा 103 (ढ्ढ), अपराध के सबूतों को मिटाने की धारा 238 (ड्ड) और आपराधिक षड्यंत्र की धारा 61 (2) के तहत आरोप लगाए गए हैं। शिलांग के पूर्वी खासी हिल्स के पुलिस अधीक्षक विवेक सईम ने बताया कि फोरेंसिक रिपोर्ट आने के बाद तीन और सह-आरोपियों के खिलाफ पूरक आरोप पत्र दाखिल किया जाएगा। इन तीन सह-आरोपियों में प्रॉपर्टी डीलर सिलोम जेम्स, लोकेंद्र तोमर, उस इमारत का मालिक जहां सोनम अपराध करने के बाद छिपी थी। इलाके के सुरक्षा गार्ड बलबीर अहिरवार शामिल हैं। जेम्स, तोमर और अहिरवार को सबूत नष्ट करने और छिपाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था और फिलहाल तीनों जमानत पर बाहर हैं।

यह है हत्या का पूरा मामला- राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी की शादी 11 मई को हुई थी। पुलिस के अनुसार, शादी से पहले सोनम, अपने परिवार की फर्नीचर की शीट बनाने वाली फैक्ट्री के कर्मचारी राज कुशवाहा के साथ रिश्ते में थी और वह राजा से शादी से खुश नहीं थी। सोनम भी अपना पारिवारिक व्यवसाय संभालती थी। शादी के बाद राजा और सोनम अपने हनीमून के लिए मेघायल पहुंचे, जहां से 23 मई को दोनों लापता हो गए। बाद में जंगल से राजा का शव बरामद हुआ। लापता सोनम की पुलिस द्वारा तलाश की जा रही थी तो वह 8 जून को उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में मिली। पूछताछ में सोनम ने राजा की हत्या की बात स्वीकारी। इसके बाद पुलिस ने हत्या में शामिल आकाश, विशाल और आनंद को उत्तर प्रदेश और इंदौर तथा मध्य प्रदेश के सागर से गिरफ्तार किया गया। बाद में राज कुशवाहा को भी गिरफ्तार कर लिया गया। 11 जून को, सोनम ने कथित तौर पर अपने पति की हत्या की बात कबूल की। हत्या के बाद सोनम इंदौर आकर छुप गई थी। उसे छुपाने वाले 3 लोगों के खिलाफ भी कार्रवाई की गई।

तीन दिन की बारिश में शहर तरबतर अभी भी अच्छी बारिश का अनुमान

इंदौर। शुक्रवार सुबह 8:30 से लेकर शाम 5:30 बजे तक डेढ़ इंच बारिश रिकॉर्ड की गई। इसके सहित इस सीजन की 33.5 इंच बारिश हो चुकी है। इस सीजन का औसत कोटा 38 इंच है, ऐसे में अब सिर्फ 4.5 इंच बारिश की और जरूरत है। सितंबर के अभी 25 दिन बाकी हैं।

उम्मीद जताई जा रही है कि बाकी का कोटा आसानी से पूरा हो जाएगा, बल्कि औसत से ज्यादा बारिश भी हो सकती है। बुधवार रात से गुरुवार तक लगभग 7 इंच बारिश दर्ज की गई थी। जबकि सितंबर का औसत कोटा 6 इंच का होता है। यानी केवल चार दिनों में ही सितंबर महीने का औसत कोटा पूरा हो गया है। शुक्रवार सुबह का मौसम मिला-जुला रहा। कहीं-कहीं बूंदाबांदी हुई और फिर धूप निकल आई। पिछले 20 दिनों में हुई तेज बारिश ने जुलाई और अगस्त की कमी की भरपाई कर दी है। मौसम विभाग के अनुसार अगले 5 से 7 दिन तक और अच्छी बारिश होने का अनुमान है। लगातार हो रही बारिश के कारण गुरुवार को दिन का अधिकतम तापमान गिरकर 24.0 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया, जो सामान्य से 6 डिग्री कम है। वहीं, रात का न्यूनतम तापमान 23.2 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जो सामान्य से 2 डिग्री अधिक है।

दिग्विजय सिंह ने कहा कि संघमित्र ने काफी प्रभावी तरीके से अपनी बात रखी

महापौर के बेटे के भाषण से इंदौर की राजनीति गरमाई, कैलाश विजयवर्गीय उसके बचाव में

इंदौर। शहर के महापौर पुष्यमित्र भार्गव के बेटे संघमित्र के भाषण के बाद छिड़ी बहस के बाद अब सियासी घमासान गहरा गया है। महापौर पुत्र के बचाव में खुलकर सामने आई। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय और बीजेपी प्रदेश उपाध्यक्ष जीतू जिराती ने सोशल मीडिया पर पोस्ट लिखकर संघमित्र का समर्थन किया।

कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने भी महापौर के बेटे की तारीफ की, हालांकि महापौर ने इस तारीफ के पीछे छिपे राजनीतिक संकेतों पर सवाल उठाए हैं। कैलाश विजयवर्गीय ने अपने लंबे पोस्ट में लिखा कि %वाद-विवाद प्रतियोगिता का उद्देश्य यही होता है कि कोई पक्ष में बोले और कोई विपक्ष में। संघमित्र ने केवल विपक्ष की भूमिका निभाते हुए अपनी वाक-कला का परिचय दिया। जैसे रंगमंच पर अभिनेता नायक और खलनायक दोनों की भूमिका निभाता है, वैसे ही इसे कला की अभिव्यक्ति माना जाना चाहिए। इसे राजनीतिक मोहना बनाना निंदनीय और अमानवीय है।

उन्होंने आगे लिखा कि जैसे मेरे प्रिय मित्र आशुतोष राणा जी इंदौर में कल आयोजित होने वाले ÷हमारे राम÷ नाटक में रावण की भूमिका निभा रहे हैं। क्या इससे वे सचमुच रावण हो गए? नहीं, यह तो केवल कला की अभिव्यक्ति है। संघमित्र को सिर्फ इसलिए ट्रोल किया जा रहा है क्योंकि वे महापौर के बेटे हैं। यह न केवल अन्यायपूर्ण है, बल्कि एक उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर युवा की प्रतिभा को तोड़ने का प्रयास भी है। हमारे समाज की सोच पर भी गहरा प्रश्नचिह्न खड़ा करता है। वाद-विवाद प्रतियोगिता में दिया भाषण अब राजनीतिक रंग ले चुका है और सोशल मीडिया से लेकर राजनीतिक गलियारों तक चर्चा का विषय बन गया है।

युवा सपने को कुचलने का प्रयास- बीजेपी प्रदेश उपाध्यक्ष जीतू जिराती ने महापौर के समर्थन में लिखा कि वाद-विवाद प्रतियोगिता प्रतिभा और वाक्पटुता का मंच है, राजनीति का अखाड़ा नहीं। संघमित्र पर हो रहा अनावश्यक प्रहार केवल अन्याय ही नहीं, युवा सपनों को कुचलने का प्रयास है। आइए, हम सब मिलकर राजनीति की इस संकीर्ण मानसिकता को नकारें और आने वाली पीढ़ी की प्रतिभा का सम्मान करें।

दिग्विजय सिंह ने की तारीफ- शुक्रवार सुबह पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने संघमित्र के भाषण के अंश को ट्विट करते हुए कहा था कि वे काफी प्रभावशाली वक्ता हैं। इसके बाद शाम को इंदौर दौरे के दौरान मीडिया के सवाल पर उन्होंने कहा कि संघमित्र ने काफी प्रभावी तरीके से अपनी बात रखी और जो उन्होंने कहा और तथ्य रखे मैं उन दोनों से सहमत हूं।

नेता बने या नहीं, अच्छा नागरिक बनेगा- महापौर ने दिग्विजय सिंह के बयान और तारीफ पर कहा कि दिग्विजय सिंह की बधाई में क्या छिपा है, यह समझने की बात है। आज कल कई वाद-विवाद प्रतियोगिताएं होती है। इसमें कोई मंत्री की भूमिका में विभाग के काम बताता है तो कुछ अन्य भूमिका के तौर पर बात रखते हैं। दूसरे छात्रों की तरह ही मेरे सुपुत्र ने भी दिए गए विषय के पक्ष में अपनी बात रखी और विपक्ष में भी रखी। लेकिन, उन्होंने केवल विपक्ष वाला हिस्सा देखा। वह कैसे देखते हैं यह उनका नजरिया है। उन्होंने प्रतियोगिता में अपना सर्वश्रेष्ठ दिया इसलिए आयोजकों ने उन्हें पुरस्कृत किया। कांग्रेस अब खेल और वाद-विवाद प्रतियोगिता को राजनीति का अड्डा बनाना चाहते हैं तो यह उनकी सोच है, उनकी मानसिकता को दर्शाता है।

तेज बारिश में तीन मंजिला मकान गिरा 150 मकानों में सिरपुर का पानी घुसा

● मकान गिरने के बाद सिरपुर तालाब का पानी कॉलोनी में घुस गया

इंदौर। तीन दिन से हो रही बारिश के कारण अब लोगों की परेशानी भी सामने आने लगी। शुक्रवार दोपहर बाद तेज बारिश शुरू हुई जो देर रात तक जारी रही। इस दौरान सिरपुर तालाब के पास अम्मार नगर में एक तीन मंजिला मकान गिर गया।

मकान ढहने से मलबा सड़क पर आ गया जिससे कई मकानों में पानी घुस गया। घटना के बाद इलाके के करीब 150 घरों में पानी घुस गया। घटना शाम की बताई जा रही है। जिससे रहवासी देर रात तक परेशान होते रहे। वहीं रहने वाले असलम खोकर ने बताया कि मकान सिरपुर तालाब के पास नाले के पास बना था। मकान गिरने के बाद लबालब सिरपुर तालाब का पानी कॉलोनी के डेढ़ सौ से ज्यादा मकानों में घुस गया। जो मकान गिरा है उसमें तब लोग बाहर निकल चुके थे इसलिए कोई जनहानि नहीं हुई। लेकिन, यह मकान एक अन्य मकान के पिछले हिस्से पर गिरा तो उसकी छत गिर गई और यह मकान भी काफी क्षतिग्रस्त हो गया।

नगर निगम की टीम जेसीबी सहित अन्य संसाधनों के साथ बाद में मौके पर पहुंचे और तालाब के जिस ओर से पानी आ रहा था उसे बंद करने का काम किया। जोन 16 के जोनल अधिकारी निर्माता हिंडोलिया मौके पर पहुंचे और लोगों को नहीं घबराने की अपील की है। काफी देर तक आपाधापी और लोगों में घबराहट रही। असलम के मुताबिक रात सवा 12 बजे तक तालाब से पानी का बहाव रुक गया। लेकिन, लोग परेशान होते रहे।

पुलिस कमिश्नर ने हरी झंडी दिखाई डायल-112 के वाहन रवाना किए

इनसे जनता को अधिक सशक्त व त्वरित सहायता मिल सकेगी

इंदौर। किसी अप्रिय स्थिति व अपराध नियंत्रण एवं आम नागरिकों को किसी भी प्रकार की समस्या होने पर समय पर सहायता पहुंचाने के उद्देश्य से, आपातकालीन सेवाओं को और बेहतर करने एवं आमजन तक पुलिस की त्वरित सहायता पहुँचाने के लिए, मप्र शासन द्वारा डायल 100 सेवा को उन्नत करते हुए डायल 112 सेवा का शुभारंभ किया गया है। जिसके अंतर्गत नगरीय पुलिस इंदौर को डायल-112 सेवा के अंतर्गत 49 एफआरवी वाहन शहर के विभिन्न थाना क्षेत्रों के लिये प्रदाय गये है।

इन डायल-112 सेवा के 49 एफआरवी वाहनों को शुक्रवार 5 सितंबर को पलासिया चौराहा स्थित पुलिस आयुक्त कार्यालय प्रांगण से आमजन की सुविधा के लिए पुलिस आयुक्त नगरीय (इंदौर) संतोष कुमार सिंह द्वारा हरी झंडी दिखाकर, सभी थानों के लिए रवाना किया गया।

इस मौके पर अति पुलिस आयुक्त कानून व्यवस्था अमित सिंह, अति पुलिस आयुक्त (मुख्या/अप.) मनोज कुमार श्रीवास्तव, पुलिस उपायुक्तगण, अति पुलिस उपायुक्तगण, सहायक पुलिस आयुक्तगण व शहर के अन्य पुलिस अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे। इस दौरान पुलिस कमिश्नर व अन्य अधिकारियों द्वारा गाड़ियों में उपलब्ध आधुनिक सुविधाओं व मेडिकल उपकरणों का निरीक्षण भी किया तथा बताया कि डायल-112 की ये गाड़ियां फर्स्ट रिस्पांस व्हीकल के रूप में काम करेंगी। इसके लिए पुलिस अधिकारियो/कर्मचारियो को इन वाहनों के संचालन और उपयोग, वाहनों की तकनीकी प्रणाली, दुर्घटना के समय उपयोगी उपकरणों और नवीन सुविधाओं के संबंध मे विशेष प्रशिक्षण दिया गया है।

आधुनिक संसाधनों से सज्जित- डायल-112 वाहनों मे जीपीएस, वायरलेस, डैशबोर्ड कैमरा, डिजिटल नेविगेशन और लाइव लोकेशन ट्रैकिंग की सुविधा है। पुलिसकर्मियों को बॉडीवॉर्न कैमरे भी दिए गए हैं। इन उपकरणों की मदद से पुलिस बल किसी भी घटना या आपात स्थिति में कम समय में घटनास्थल तक पहुँचकर तुरंत कार्यवाही कर सकेगा। इससे न केवल सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ होगी, बल्कि दुर्घटना और राहत कार्यों में भी गति आएगी।

इस अवसर पर पुलिस पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह ने कहा कि, मध्यप्रदेश शासन द्वारा उपलब्ध कराए गए इन नए वाहनों से पुलिस की कार्यक्षमता और आमजन की सुरक्षा को नई ऊँचाई मिलेगी। तेज़ रिस्पॉन्स और बेहतर सेवा अब हर नागरिक तक पहुँचेगी। साथ ही नागरिकों से अपील करी कि वे डायल-112 सेवा का सही और जिम्मेदारी से उपयोग करें तथा समय पर सही सूचना देकर इसे और अधिक सफल व प्रभावी बनाएं।

आपातकालीन सेवाएं एकीकृत - डायल-112 सेवा में अन्य आपातकालीन सेवाओं को भी एकीकृत किया गया है, जिसमें पुलिस सहायता-100, महिला हेल्पलाइन-181, चाइल्ड हेल्पलाइन-1098, साइबर हेल्पलाइन-1930, फायर सेवा-101, एंबुलेंस-108 व अन्य अप्रिय स्थिति में सहायता के लिए आमजन डायल 112 डायल कर, पुलिस की त्वरित सहायता प्राप्त कर सकते है। सड़क दुर्घटना, अपराध, आगजनी, महिला सुरक्षा अथवा किसी भी आकस्मिक परिस्थिति में तुरंत डायल-112 नंबर डायल कर इस सेवा का सदुपयोग किया जा सकता है।

वैशाली का नगरपुत्र

व्यंग्य

धर्मपाल महेंद्र जैन

लेखक कनाडा निवासी व्यंग्यकार हैं।

घनघोर अंधेरी रात के बारह बजे बुलडोजरसिंह का मोबाइल घनघनाया। साइलेंट सेटिंग पर रखा मोबाइल बजे मतलब कोई अति विशिष्ट कॉल। देखा तो प्रदेशसिंह का फोन था। प्रदेशसिंह ठहरे उजाड़ूपट्टी राज्य के आगामी चुनाव में चीट मिनिस्टर के अघोषित चेहरे। 'ठाकुर साब पाँय लागूँ', बुलडोजरसिंह ने कहा। 'बधाई हो बुलडोजर, तुम्हारा नाम हाईकमान की लिस्ट में घुसा दिया है। जल्दी आ जाओ। तुम्हारा इंटरव्यू है, प्रदेशसिंह ने कहा। बुलडोजरसिंह टिकट प्राप्ति के लिए दो साल से लगे थे। चुनाव की घोषणा हुई तो टिकट की लड़ाई तेज हो गई। जिला कमेटी ने नाम बढ़ाया तो प्रदेश कमेटी ने रोक दिया। तब बुलडोजरसिंह ने जुगत भिड़ा कर सीएम के संभावित चेहरे को अपनी जुबान और निष्ठा दे दी। आप टिकट दिलाओ तो हम आपके और विरोधी को टिकट मिला तो पार्टी गई भाड़ में। फिर मत कहना कि ठाकुर, हमको हिंट भी नहीं दी। टिकट चाहिए मतलब चाहिए।

प्रदेशसिंह का संदेसा आया तो घंटे भर में बीसों गाड़ियों ने चारों ओर से घर घेर लिया। रातोंरात निकलकर सुबह-सुबह वे सदल-बल पार्टी कार्यालय पहुँचे। बुद्धिमान थे सो पार्टी कार्यालय के पिछले दरवाजे के पास में जम गए। वहीं अपना डेरा-तंबू तनवाया, पठ्ठों के लिए गद्देदार कुर्सियाँ लगवाईं। टेंट पर चहल-पहल बनी रहे, इसलिए खानपान की बढ़िया व्यवस्था करवाई। टिकट कमेटी के लोग इसी दरवाजे से घुसे तो उन सबसे सुखद राम-राम हो गई। पर शाम तक नंबर नहीं आया तो उनका पारा ऊपर-नीचे होने लगा। प्रदेशसिंह को याद दिलाई तो उनका संदेसा आया- 'रात भर होश-हवास में रहना। क्या मालूम कब बुला लें! जिनको टिकट देना होता है उनका नंबर रात में ही आता है।' उन्होंने समर्थकों को टुन्न होने की छूट दे दी ताकि वे बुलडोजर भैया का नाम खराब न करें। आखिर रात ग्यारह बजे उनका नंबर आया। बुलडोजर भैया जिंदाबाद के नारे लगने लगे। थोड़ी देर में 'बुलडोजर भैया आगे बढ़ो, हम तुम्हारे साथ हैं' का नारा लगाने वालों की भीड़ बढ़ गई। प्रसन्नचित्त बुलडोजरसिंह कमेटी के सामने उपस्थित हुए।

'आपने पहली बार टिकट मांगा है!' एक कमेटी मेंबर ने पूछा। वे बोले- जी भाईजी, दस सालों से पार्टी की सेवा में हैं, इस बार जिला कमेटी ने बोला- आप लड़ लो, तो हम तैयार हो गए।

'हूँ, आपके पास पाँच लाइसेंसी रिवाल्वर हैं, जबकि परिवार में दो लोग हैं।' 'जी तीन रिवाल्वर बॉडी गार्ड्स को दिए हैं', सधा उत्तर दिया बुलडोजरसिंह ने। 'आपने कामधंधे में लिखा है बुलडोजर सप्लाय। ये क्या धंधा हुआ?' दूसरे कमेटी मेंबर ने पूछा। भाईजी, जबरदस्त धंधा है। आपकी कृपा से सात बुलडोजर हैं अपने पास। आसपास के तीन-चार जिले हम ही सम्हालते हैं।

'बुलडोजर से आपकी इमेज बहुत खराब होती होगी', एक नकचढ़े कमेटी मेंबर ने नाक-भौं सिकोड़ते हुए प्रश्न दागा। ÷काहे भाईजी, पूरे इलाके का बच्चा-बच्चा जानता है वैशाली के नगरपुत्र को! कोई स्कूल हो, कालेज हो, मंदिर हो, पंचायत हो, शादी-ब्याह हो, उनके कार्यक्रम में बुलडोजर भैया विशिष्ट अतिथि होते ही हैं, मुख्य अतिथि फिर कोई भी हो। इलाके का हर थानेदार हमारा फोन नंबर रखता है। इससे ज्यादा क्या इमेज भाईजी!

'अच्छा, आपके इलाके में आपका 'अपोजिशन' कैसा है'? पहले मेंबर ने पूछा। हम खड़े रहेंगे तो अपोजिशन क्यों! बुलडोजर भैया का नाम आते ही, हिंदु-मुस्लिम, सवर्ण-दलित, अगड़े-पिछड़े सब हाथ जोड़कर हमारे साथ खड़े हो जाएँगे। डीएम से लगा कर सीएम तक हमारी पहुँच है भाईजी। हमसे ज्यादा काबिल उम्मीदवार हमारे इलाके में कोई और पैदा ही नहीं हुआ।

बुलडोजरसिंह ने अपना रिज्यूमे जितना याद था वो सुना दिया। 'मान लीजिए, यदि पार्टी आपको इस बार टिकट नहीं दे पाई तो...?' नकचढ़े मेंबर ने अपनी नाक घुसाते हुए फिर असहज करने वाला प्रश्न दागा। बुलडोजरसिंह उसके उकसावे में नहीं आए। शांत चित्त बोले- भाईजी, पार्टी है तो बुलडोजर है और बुलडोजर है तो पार्टी है। हमने आज तक कोई गलत जगह बुलडोजर नहीं चलाया, पर बुलडोजर को रास्ता बदलने में कोई टाइम थोड़े ही लगता है। दायें की जगह बायें मुड़ गया तो बुलडोजर का कौन, क्या उखाड लेगा? मुस्कुराते हुए बुलडोजरसिंह बोले।

'चुनाव फंड में आप कितना चंदा डलवा सकेंगे?' कमेटी अध्यक्ष ने पूछा। पार्टी जो कहेगी, डलवा देंगे। धनराशि कोई पार्टी से बड़ी तो है नहीं। अब जब आपने हमसे वचन ले ही लिए हैं तो आप भी पक्का वचन दे दीजिए। बिंदास बुलडोजरसिंह ने कहा।

'किसी से अभी कहिएगा नहीं, हाईकमान की लिस्ट में आपका नाम सबसे ऊपर रखे हैं। आप जैसे बुलडोजर ही पार्टी को मजबूत बनाते हैं।' कमेटी अध्यक्ष ने कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। नेपथ्य से आवाज गूँज रही थी हमारा नेता कैसा हो... बुलडोजर भैया जैसा हो।

(हास्य-व्यंग्य)

थप्पड़-थप्पड़ का खेला

सुरेश सौरभ

बात पुरानी है-तब अपने विद्यार्थी जीवन का अल्हड़पन और लड़कपन था। पड़ोस में कुछ लड़के रहते थे-वे कहीं गाँव से, शहर में आकर पढ़ाई करने आये थे। कमरा किराये से लेकर बड़ी मौज में रहते थे। अक्सर आधी-आधी रात तक वह खूब हंसते, कभी रोते, कभी चिल्लाते। मैंने एक रोज उनसे पूछा-भाई क्या मामला है-तुम लोगों का, आधी-आधी रात तक हंसने-गाने-रोने का कौन सा सीरियल चलता है। तुम लोगों की क्या नाटकबाजी है ये सब।

वे हंसते हुए बोले-जब पढ़ने का मन नहीं होता, मन बहुत ऊबने लगता हैं। तब हम लोग चुट्कुलेबाजी शुरु करते है- धुंआधार हास्य-व्यंग्य के लतीफे शुरु करते हैं और तब हंसगुल्लों की बौछार शुरु होती हैं और फिर जब हम हंसगुल्लों से हंसते-हंसते लोटपोट ,बेहाल हो जाते हैं-पेट पर तमाम बल पड़ने लगता है-तब हम एक-दूसरे को थप्पड़ मारते हैं-तब हमारी हंसी-ठहाकों का प्रवाहमान सैलाब थमता है।

मेरा पूरा सिर नाच गया। मैंने कहा-वाह क्या सीन है। हंसी के मैच में थप्पड़ की फिक्सिंग। जिओ और जीने दो के महान समीकरण पर क्या खूब मनोरंजन का खेला रचाया है, भाई तुम लोगों ने। वाह! क्या गजब का टाइम पास ,टॉप क्लास का मनोरंजन है। शगल है। बरसों बीते गए, हंसगुल्ले वाले उन लड़को को, अब मैं नेता के वेश में टीवी, मोबाइल पर रोज देखता हूँ। विद्यार्थी जीवन से शुरू हुआ उनका, थप्पड़-थप्पड़ में हंसी-ठहाकों और रोने, गाने का खेला, अब कहीं स्याही फेंक, कहीं जूता फेंक ,कहीं कालिख पोत आदि इत्यादि तक की बड़ी पटकथा तक पहुँच चुका है।

स्वरचित मौलिक अप्रकाशित

राजकुमार कुम्भज की दो कविताएं.

1.ख़लल.

बच्चे अपने -अपने
साथियों संग खेल रहे हैं रंग यहीं -कहीं
मैं उन्हें देख रहा हूं अपनी खिड़की से
बच्चे मज़े में हैं, भरपूर मज़े में इस वक़्त
और अपने -अपने ही रंग में भी कमोबेश

सच ही कहा जाता रहा है हर कालखंड में
कि ज़िम्मेदारियां उलझाती हैं सभी को
और फिर अपनी ही ज़िम्मेदारियों में कुछ - कुछ
उलझकर रह जाते हैं सभी के सभी
शायद कुछ -कुछ उलझ गया हूं मैं भी यहीं -कहीं
ख़लल है ज़िम्मेदारियों का एहसास
मज़े में ख़लल डालती हैं ज़िम्मेदारियां ही
फिर भी अज़ीब है कितना -कितना
कि पानी के बुलबुले जैसा ही क्षणभर
बेहद क्षणिक ही होता है कोई भी मज़ा
बंद हो रही हैं खिड़कियां कुछ -कुछ
और ख़लल में भी कुछ - कुछ हतप्रभ हूं मैं
और बच्चे हैं कि अपने -अपने मज़े में
अपने -अपने साथियों संग खेल रहे हैं रंग
मैं देख रहा हूं उन्हें।

2.सब.

सब गया,सब की तरह
सब में,सब का सब था,सब जैसा
जिसके ज़रिए है सब और सब में
मैं भी उसी सब में एक
किन्तु अकेला।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

खुशियाँ

प्रभुनाथ शुक्ल

शहर के उस रेस्टोरेंट से अभी मैं नाश्ता कर बाहर निकला था। घर की तरफ आने के लिए जैसे ही कार की तरफ बढ़ा तभी तक़रीबन एक दस साल का मासूम बच्चा मेरे सामने आकर खड़ा हो गया और सामने वाली दुकान की तरफ इशारा करने लगा। दुकान गिफ्ट कार्नर की थी।

मासूम शहर की गलियों में बिखरे प्लास्टिक के कूड़े चुन रहा था। वह बार-बार मेरी आखों में आँखे डालकर देख रहा था और उस दुकान की तरफ इसारा कर रहा था। थोड़ी दूर पर उसका साथी भी खड़ा था। मैं उसे साथ लेकर दुकान की ओर बढ़ गया।

क्या लोगे...?

उसने चॉकलेट वाले बॉक्स की तरफ इशारा किया।

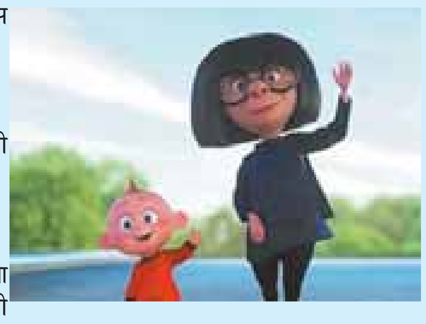

क्या नाम है रोहन

कहाँ रहते हो

उसने इशारा किया अपनी बस्ती की तरफ

पापा का क्या नाम है राजू

स्कूल जाते हो...?

जबाब में उसका सर नीचे था और वह चुप हो गया।यानी माँ-बाप उसे स्कूल नहीं भेजते थे। कूड़े बिन कर वह भी परिवार का आर्थिक बोझ उठा रहा था जबकि देश ट्रिलियन वाली अर्थव्यवस्था में था।

सवालों की झड़ी के बाद संभवत~चॉकलेट पाने की उसकी मुराद पर पानी फिर गया था। अब उसका सिर नीचे और मुँह बंद था। मैं उसकी भवाना को समझ गया था।

अच्छा, ठीक है बताओ कौन सी चॉकलेट लोगे

उसने अपनी पसंद वाली चॉकलेट पर अंगुली दिखाई। मैंने चॉकलेट वाले दुकान दार से उसे चॉकलेट देने का आग्रह किया।

दुकानदार ने कहा अरे साहब ! छोड़िए आप भी कहाँ बझ गए। इन स्स... सा...का रोज का यहीं धंधा है। आप भी इन्हें इतना महंगा चॉकलेट दिला रहें हैं ?

मैं ने दुकानदार की बात को अनसुनी कर दिया। अब चॉकलेट पाकर वह बेहद खुश था, लेकिन उसका साथी उदास दिखा। उसके मन की बात को मैं समझ गया। उसे भी हमने चॉकलेट दिलाई। अब वे दोनों मुस्करा और खिलखिला रहे थे। पीठ पर कूड़े का ढ़ेर लादे एक हाथ हिलाकर मुझे बाय-बाय कर रहे थे। मैं भी खुश था वे भी खुश थे और मेरी कार घर की तरफ बढ़ चली थी।

लेखकों की पहली पाठशाला छोटे शहरों के अखबार

वक्रोक्ति

मोहन वर्मा

लेखक पत्रकार हैं।

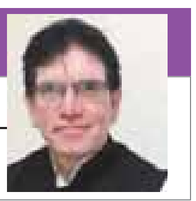

ह **अब उम्र के उस पार से इस पार तक आते आते भूलने की इस उमर में न जाने क्या क्या याद आता है।**

बात निकलेगी तो मूंछें फूटने की उमर में मन में फूटने वाले लड्डू भी याद आने लगते है और किशोरावस्था में शुरू की गई तुकबंदी के साथ साथ काले अक्षरों से अपनी दोस्ती, कस्बे के वे स्थानीय अखबारों,उनकी पत्रकारिता और बीते दशकों के खट्टे मीठे अनुभव भी याद आने लगते है।

बात सत्तर के दशक की। काले अक्षरों से कब दोस्ती हो गई,लिखने पढ़ने का शौक कब और कैसे लग गया वो तो पता नहीं मगर मालवा के बड़े बड़े अखबारों को पहली प्राथमिकता से बिला नागा पूरा पढ़ना। खासकर 'पत्र सम्पादक के नाम' फिर उसमें लिखना भी। उस समय के हमारे कई पत्र लेखक साथियों का नाम आज नामचीन लेखकों में शुमार है। धर्मयुग,हिन्दुस्थान,सारिका पढ़ते पढ़ते लेखक बनने का शौक सिर उठाने लगा। अब रास्ता कस्बे के छोटे अखबारों से होकर ही निकलता था तो जाहिर है कि उनके साथ के रोचक,यादगार किस्से भी भूलने की उमर में याद आना स्वाभाविक है।

साप्ताहिक टाईम्स के सम्पादक पिता के दोस्त थे। घर आना जाना। हमारे लिए बड़ी हस्ती। बिला नागा पढ़ते और प्रतिक्रिया से उन्हें अवगत भी करवाते। हमारा उत्साह और उनकी खुशी से हुआ यों कि एक दिन वे बोले-कुछ लिखा भी करो,लिखो तो हमें देना हम छापेंगे..अंधे को क्या चाहिए..दो आंखें, उन दिनों रेडियो सुनने का भी बड़ा शौक था,कोई गाना अच्छा लगता था तो कॉपी के पिछले पन्ने पर लिख डालते थे। उसी पन्ने पर आनन फानन में दो मुक्तक लिख डाले और दूसरे दिन पन्ना फाड़कर सम्पादक जी के हवाले कर दिया।आते जाते पूछ लेते- कब छपेगा ? और एक दिन उन्होंने अखबार हमारे हाथों में सोंप दिया। देखा तो तीन मुक्तक छपे थे। दो अपने,एक पन्ने पर लिखा फिल्मी गीत का मुखड़ा। लोगों ने मजे लिए-वाह फिल्मी गीत भी अपने नाम से छपवा रहे हो..

एक और अखबार 'विस्फोट' दो तीन अंक जोश खरोश से निकले। हम भी कुछ दें ..उत्साह से पूछा।

सम्पादक जी कहा..जरूर। कुछ तुकबंदी दी भी। हर अंक का इंतजार। जब पूछते - बॉस नया अंक कब ? ज़वाब मिलता - अरे यार विस्फोट रोज रोज थोड़ी होता है। कुछ ही अंकों के बाद अखबार बंद हो गया और कहूँ कि आस निरास भई तो कुछ गलत नहीं होगा।

नई खबर भी साप्ताहिक अखबार। तब तक यहां वहां कुछ कुछ छ्प कर पिचान बनने लगी थी कस्बे में। सम्पादक जी ने कहा-हमारे अखबार में भी कुछ दे देना,छापेंगे। मारे खुशी के रातभर नींद नहीं आई। एक व्यंग्य लेख दे दिया। दो दिन बाद पूछा-कब छपेगा ? बड़ी दुःखद घटना सुनाई सम्पादक जी ने। बोले-क्या कहें यार,सारी सामग्री लेकर ऑफिस से प्रेस जाते समय कारीगर इधर होटल में पोहे खाने बैठ गया और उधर साइकिल पर रखा बंडल गाय खा गई. अब क्या कहा जाये।

साप्ताहिक शहर भ्रमण के सम्पादक ने कहा-ठीकठाक लिख रहे हो,हर सप्ताह एक कॉलम अपने अखबार में लिख दिया करो। उत्साह में भरकर लिखना शुरू किया-'फटे में टांग'। दो एक माह तो सब ठीक रहा। आगे एक दिन सम्पादक का हरकारा तीन माह का अखबार का बिल लेकर हाजिर हो गया भिया ने भेजा है वाह..पारिश्रमिक तो गया भाड़ में अब अखबार का बिल भी..शिकायत की तो मुस्करा कर रह गए सम्पादक और हम भी सोचने लगे-कहाँ डाल दी 'फटे में टांग'।

बहरहाल जो भी हो, स्थानीय अखबारों,उनकी पत्रकारिता और बीते दशकों के खट्टे मीठे अनुभव बार बार याद आते है। लेखन के शौकीनों की पहली पाठशाला जो होतें है वे ।

पुस्तक समीक्षा

सुरेश गुप्ता

'बस, तुम' प्रेम की विलक्षणता की कविताएँ

अग्रज कवि सुधीर सक्सेना का नया कविता संग्रह 卐बस, तुम卐 पढ़ा, तो पढ़ता ही चला गया। कब रात का दूसरा पहर आ गया, पता ही नहीं चला। सोचा 79 कविताओं पर ही बस, क्यों। सुधीरजी एक सैकड़ा कविताएँ भी इस संग्रह में पिरोते तो भी प्यास नहीं बुझती।

सुधीरजी की भाषा, उनके भाषायी वितान से मैं उनके पत्रकारीय लेखन के दिनों से ही मुरीद हूँ, बल्कि यूँ कहें कि इश्क करता रहा हूँ। पूर्व में अनेक संग्रहों की कविताओं में उन्होंने अपने भाषायी कौशल का यथेष्ट प्रमाण दिया है। 'बस, तुम' में तो उनका यह कौशल अपने उरूज पर है। उनकी भाषा कब देशज और जनपदीय हो जाती है, कब विशुद्ध देवनागरी और कब नितांत वैज्ञानिक शब्दावली से बावस्ता हो जाती है, वह पढ़ते ही बनता है।

इस संग्रह को पढ़ते सुधीरजी की दो कविताएँ 'जब चन्द्रमा बजाता है बाँसुरी' और 'तुम, समुद्र से नहाकर निकली और पहाड़ को तकिया बनाकर लेट गयी, घास के बिछौने पर अम्लान।' बरबस याद आ गयीं। मुझे लगता था कि इनसे बढ़कर प्रेमिल भावाभिव्यक्ति क्या ही हो सकती है। अपनी छोटी सोच में मैं गलत था। 'बस, तुम' की कविताएँ उन कविताओं से कहीं आगे, कहीं गहरी, ऐन्द्रिक और प्रेम की आदिम सुरंग में पैबस्त है।

ये कविताएँ तुम्हें, जिसे प्रेम किया और उन्हें भी जिन्हें चाहा कि उनमें भी तुम्हारा ही अक्स था - अपनी पत्नी के दिवंगत होने के बाद पहले संग्रह में यह पंक्तियाँ सुधीरजी के अप्रतिम प्रेम के साथ ही साहस को भी बताती हैं, भला कौन व्यक्ति, फिर चाहे वह कवि ही क्यों न हो, ऐसा लिख सकता है। मुझे लगता है यह साहस, उनके पत्रकारिता कर्म के पार्श्व से इन पंक्तियों में आ पाया।

संग्रह की पहली कविता की इन पंक्तियों को देखे -

गयी ही कहाँ हो तुम कहीं
तुम हो अनुपस्थिति में उपस्थित,
मेरा एकालाप भी वार्तालाप है तुमसे
मुसलसल
लोक की बस लोक जाने
पर हमारे वास्ते रहा प्रेम कल्पद्रुम
साथ थी, मेरे, हो, रहोगी
एक तुम !
बस, तुम !!

कवि, अपनी प्रेयसी, जो पत्नी भी बनी, और अब देवलोक भी चली गई, को अब भी अपने पास ही रहेगी, की कामना को शब्दों में रूपावित करता है, तो पाठक, सुधीरजी और भाभीजी के प्रेम राग को अपनी गीली आँखों में बंद और साँसों में तरंगित करने से रोक नहीं पायेगा। 'मैं आऊंगा तुम्हारे पास' भी कुछ ऐसी ही कविता है।

अपनी दिवंगत पत्नी के लिए लिखी ये सभी 79 कविताएँ प्रेम के, अनुराग के, मिलन के भावों को जिस विलक्षणता के साथ प्रकट करती है, वह कवि के साथ हमें भी उनके प्रेमल संसार में लिये जाती है। ऐसा बहुत कम होता है कि किसी दूसरे के प्रेम, प्रेमिका, दिवंगत पत्नी के साथ साहचर्य से हम इस हद तक प्रभावित हो कि 'इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में ही सही' ऐसा प्रेम हम भी करें और हो सके तो उसे कविता में पिरोये, की ख़्वाहिश कर बैठे। इस संग्रह को पढ़कर ऐसी ही ख्वाहिश होती है हमारी।

सुप्रिया साथ है खुले आसमान तले
बारिश में
बरसात में सचमुच बरसती है शराब।
या
प्रेम से नहीं मौत की तारीख
अलबत्ता प्रेम से बदल जाती है जिंदगी
आमूलचूल।
या
वक्ष की स्मृति में है
आलिंगन
होंठों की स्मृति में है
चुम्बन
स्मृति और कुछ नहीं चाहती
फिर से हरी हो स्मृतियाँ।

जैसी पंक्तियाँ में भरी प्रेम की स्मृतियों की शराब भला कौन नहीं पीना चाहता। अति साँकरी प्रेम की गली सुधीरजी की इस संग्रह की कविताओं में अभूतपूर्व विस्तार पाती है, वह देश-विदेश में भ्रमण कराती है पाठक को प्रेम, प्रेमिका, आंगिक सौष्ठव से एकाकार करती। कभी कंपित होती, कभी सुवासित करती। कवि कहता भी है -

सातवीं ऋतु है प्रेम
सातों ऋतुओं को समाये अपने आप में।
या
नीम सन्नाटे में हठात
बजती है चूड़ियाँ
जब-जब ऐसा होता है
हिनहिना उठते हैं सूरज के सातों घोड़े
या
प्रिया की एक चितवन
और मैं उछाल दूंगा
काल को किसी गेंद की तरह
दूर बहुत दूर
किसी ग्रह के
अनजान आसमान में।

'बस, तुम' संग्रह में कविता में प्रेम, जिस तरह गुंफित हुआ

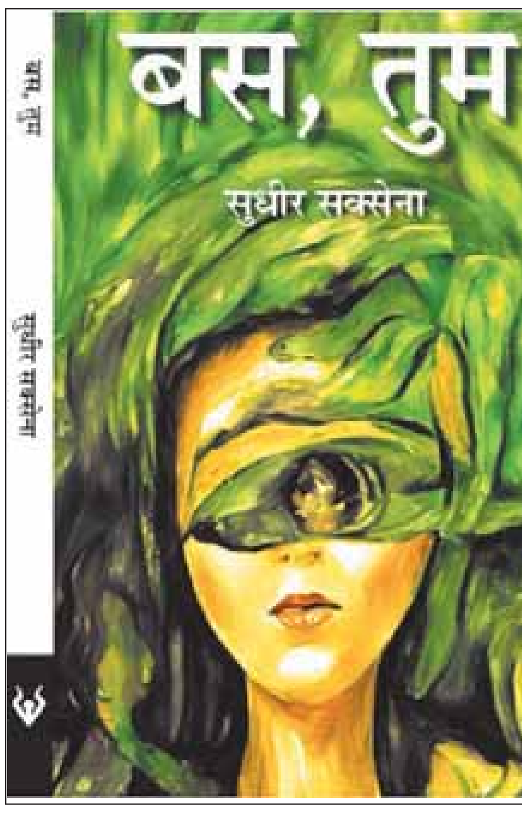

है, वह कवि की भाव और शब्द सम्पदा से ईर्ष्या पैदा करता हैं। प्रेम कभी गाँठ हो जाता है, कभी गुम्मढ़, कभी मिस्टिरियस त्रास, कभी उबटन, कभी व्यूह, कभी शहद, कभी नमक, कभी सोना, कभी गोदना, कभी रसायन, कभी जीरा और न जाने कितने बिम्बों में। प्रेयसी इस संग्रह में वसुंधरा है तो चेरी-पलाश जित्ती लाल भी, वीरबहुटी भी, उपमाओं से भरी है। प्रेयसी की याद, उसके साथ बिताये पल, सुना संगीत, पी शराब जैसे प्रसंग जितना सुधीर भाई को उद्वेलित कर रहे हैं, पाठक भी उद्वेलित हुए बिना नहीं रहेगा, इसमें कोई संशय नहीं है।

इस संग्रह की कविताओं की भावभूमि अपनी प्रिया की गहन स्मृतियों की है। यह कवि की प्रेम यात्रा की बानगी भी है। इन कविताओं में अपनी प्रिया, अपनी सहधर्मिणी के साथ कवि की बराबर की मौजूदगी है। यह बराबर ही मौजूदगी ही सच्चे अर्थों में प्रेम का मर्म बताती है। आख़िर जिस प्रेम की बात कवि कर रहा है, बता रहा है, वह अकेला नहीं होता। इस प्रेम में एक और एक मिलकर ही प्रेम का अर्थ प्रकट करते हैं और भरपूर करते हैं। यह प्रेम 'देह और गेह' का प्रेम कहकर नकारा नहीं जा सकता। संग्रह की कविताएँ एक साथ प्रेम का उजला पक्ष और प्रेयसी या संगिनी, जो भी चाहे कहे, की अनुपस्थिति के कोहरे को जताती है। साथ ही स्मृतियों के बहाने प्रेम को कालातीत भी बताती है। इसमें कुछ अतिरेक अगर है भी तो वह बेहद खूबसूरती से अपनी जगह बनाकर अनिवार्य सा लगता है।

ऐसी मान्यता रही है कि कविता जीवन की पदार्थमयता से ही अपना शिल्प और रूप पाती है। सुधीरजी की इन कविताओं में उनका प्रेम, सांसारिक क्रियाकलापों-प्रकृति के ब्यौरों से एकाकार होकर, अद्भुत रूप से उद्भूत होता है। कविता सच कहती है और यहाँ जो कविताएँ हैं वे सुधीरजी और उनकी प्रेयसी, संगिनी के संसार का सच है। बहुत दिनों बाद पूर्णत~प्रेम पर एकाग्र यह संग्रह, जो प्रेम में थे, जो प्रेम में होना चाह रहे हैं के साथ ही सबको पसंद आयेगा। उन्हें भी जो कविता को शिल्प, भाषा और भाव के प्रतिमानों पर आंक कर देखने-पढ़ने के आदी हैं।

पुस्तक - बस, तुम (कविता संग्रह)
कवि - सुधीर सक्सेना
प्रकाशक - आधार प्रकाशन, पंचकूला

दुख, दर्द, बेचैनी को फलक प्रदान करते बिकाश

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

बचपन में जब खेलने के दिन होते हैं, मस्ती मजा करने का समय होता है, समय होता है सपनों के खुले आकाश में बिचरने का, ठीक वही समय था जब पिता के साये से वंचित हो गये थे बिकास भट्टाचार्जी, रंगीन सपनों पर समय ने सफेद चादर लपेट दी थी, गमगीन परिस्थितियों के साथ आगे बढ़ने को बेवस करने लगा था समय पर बिकाश संघर्षों से दो चार करने वाले मनुष्य रहे फलत꞉ कभी हार नहीं मानी नाही किसी विशेष वाद परिवाद के चक्कर में पड़े। बस निरंतर सृजन में रमे रहे और कला की अनंत यात्रा पर हमेशा कुछ विशेष रचते रहे।

भट्टाचार्जी इस आघात के बाद से ही बहुत गंभीर रहने लगे थे। दिन गरीबी में बीत रहे थे, संकटों का दौर प्रभावी हो रहा था पर इन सारे घटनाओं से वो हतास होने के बजाय खुद को मजबूती के साथ खड़ा कर रहे थे, परिवेश को भरपूर रुप से सहेज रहे थे खुद के भीतर, आत्मशात कर रहे थे द्वंदो से। समय के पहले ही ये बड़े हो गये थे और यही सारी चीजें बाद में इनके कृतियों के विषय हुए जो इनके गंभीर अध्ययन और चिंतन के बदौलत इतने यथार्थपरक हुए कि घटना से चित्र को अलग कर पाना नामुमकिन सा हो गया था। 'डॉल सिरीज' में ऐसा लगता है कि हर जगह ये खुद को ही चित्रित कर रहे हैं बस नजर मुझ पर ना जाये इसलिए खुद के जगह गुड़ियों को रिप्लेस कर दिए हों जान पड़ा है। मासूमियत और गरीबी के साथ ही लाचारी का भयावह अंकन दिखता है आपके कृतियों में। चेहरे गंभीर और उम्मीद के आस में नजर आते हैं, प्रश्नचिन्ह भी लगाते हैं सामाजिक परिवेश और ताने-बाने पर। धुंधला परिवेश दर्शाने हेतु धुंधले पृष्ठभूमि का अंकन आपके कृतियों की पहचान है। कुछ वर्ष पहले एक फोटोग्राफ खूब वायरल हुआ था जिसमें एक बच्चा पेट के बल समुद्र के किनारे पड़ा हुआ था दूर कहीं गिद्ध उस पर नजर गड़ाए हुए उसके अंत समय का इंतजार कर रहा था। दृश्य देखकर करेजा कांप उठा था, संवेदनशील व्यक्ति तो सहन ही नहीं कर पा रहा था इस परिस्थिति से उपजे ज्वार को। सोचिए कितने समय पहले ही ऐसे कितने चित्र डॉल श्रृंखला के बहाने भट्टाचार्जी बना गये हैं जिसे देखकर मन सिहर उठे, तड़प उठे, सांसारिक जीवन से मोहभंग हो उठे, मनुष्यता को शर्मशार हो जाना पड़े। प्रश्नचिंह खड़ा हो जाता है समाज पर। बंगाल के तत्कालीन दशा और वहाँ के रहन-सहन को बिल्कुल ही यथार्थता के साथ समाज के सामने रख दिया है आपने अपने कृतियों में और इन सबके पीछे आपके पारखी नजर, जो बालपन से ही सक्रिय हो उठा था, का कमाल है। आपके चित्रों में आपके बचपन की कमियां साफ झलकती हैं, अभाव को आपने बड़े ही प्रभावी तरीके से अंकित किया है, अभाव आपके कृतियों में अपने असली रूप में आ खड़ा हुआ है जैसे। डॉल के बहाने आप जीवन के अस्थिरता तथा बेचैनी को बखूबी उकेरने का प्रयास किये हैं जो लगभग उस परिस्थितियों से गुजर रहे सभी हेतु प्रतिनिधि का काम करें, सभी उसे खुद के साथ जोड़ कर देख सकें। आप अपने पसंदीदा विषय ललित कला का अध्ययन कलकत्ता से पूरा करने के बाद से ही निरंतर यहाँ-वहाँ अध्यापन कार्य में लगे रहे और कृतियों में कुछ नयापन लाने की भी लगातार कोशिशे रहीं।

पहली एकल प्रदर्शनी 1965 में कोलकाता में ही करने के बाद आप निरंतर राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर तक अपनी पहचान बनाते गये। कोलकाता, दिल्ली, मुंबई होते हुए 1969 में पेरिस में चित्रों के प्रदर्शन के बाद, यूगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया, रोमानिया, हंगरी, लंदन तथा न्यूयॉर्क जैसे जगहों तक आप आसानी से पहुंच गए। कैनवास पर तैल रंग, चारकोल, पेस्टल, आदि माध्यमों पर आपने कार्य किया। बंगाल के मध्यमवर्गीय परिवार के दुःख-दर्द, रहन-सहन, अंधविश्वास, हिंसा आदि विषयों पर आप लगातार काम करते रहे और शैली के मामले में भी

आप सबसे अलग खड़े दिखाई दिये हैं। समरेश बाबू, टैगोर, सत्यजीत राय एवं इंदिरा गांधी आदि के आपने पोट्रेट भी बनाए। मॉडर्न के अंधानुकरण वाले समय में जब लोग आब्स्ट्रैक्ट के बहाने पता नहीं क्या-क्या रच रहे थे ऐसे समय में अपने आस-पास का अंकन वो भी यथार्थता के जमीन पर इनकी विशेषता बन गई थी। खेल, ट्यूबवेल का उद्घाटन, बालिका बधु आदि चित्र आपके प्रसिद्ध चित्रों में से हैं। बंग रत्न, ललित कला अकादमी फेलोशिप, पद्मश्री सहित ढेरों पुरस्कारों से आप सम्मानित भी हुए। आधुनिक कला संग्रहालय, ललित कला अकादमी, भारत भवन सहित कई जगहों पर आपकी कलाकृतियां संग्रहित है। रामकिंकर बैज के जीवन पर आधारित उपन्यास हेतु चित्र भी आपने बनाए। साल्वाडोर डॉली का प्रभाव भी देखा जा सकता है आपके कृतियों में। आपके कृतियों में रहस्यमय परिस्थितियों का भी वर्णनात्मक शैली में अंकन देखा जा सकता है। लगभग हर उम्र के लोग, हर वर्ग के लोग आपके कृतियों में शामिल हैं पर परिस्थितियों के अनुकूल ही सभी पर भाव भी परिलक्षित है साथ ही कृतियों में वजन लाने हेतु विषयानुरूप पृष्ठभूमि का संचयन भी आपके विशेषताओं में शुमार है।

बाढ़ के एक चित्र ने तो बौना बना दिया है मनुष्य को प्रकृति के आगे। प्रकृति के अस्तित्व पर जब-जब संकट आयेगा वो अपने अस्तित्व हेतु उठ खड़ी होगी और ऐसी स्थिति में मनुष्य जो प्रकृति के पर कुतर कर खुद को आसमान में स्थापित करना चाहेंगे, दो गज जमीन को भी तरह जायेंगे। ऐसा ही कुछ संदेश इनके इस कृति में है जहाँ, चिट्ठी-पत्री को खुद में सहेजने और किसी की बातें, यादें, दुख-दर्द, एहसास, सुख आदि को समय पर किसी और के पास पहुँचाने का बाकायदा काम करने वाले डाक विभाग के लाल डिब्बे के साथ ही बाढ़ में डूबते वृद्ध और बच्चे को दिखाया गया है, झंडा और पत्थर भी संकेत के रूप में प्रयोग हुए हैं।

21 जून 1940 को कोलकाता में जन्मे बिकाश जी के कृतियों में समय-समय पर विकास की निरंतरता साफ देखी जा सकती है। चेहरों पर इतना दर्द कि घाव, चित्र देखने वालों को हो उठता है। गंभीर विषयों का बड़ी ही गंभीरता के साथ अंकन आपके मन के भीतर चल रहे द्वंद के गंभीरता को दिखाता है। कई विषय-वस्तु पर डिटेल से काम न करने के बाद भी भाव स्पष्ट हो गया है। चित्र 'ट्यूबवेल का उद्घाटन' में ग्रामीण परिवेश से ही आगे आए एक राजनीतिज्ञ किस तरीके से अपनों के बीच ही खास बन जाना चाहता है बाकी हेतु वो अजनबी हो जाने में जरा भी संकोच नहीं करता। पूराने नलके को बगल में गिरा दिया गया है जो राजनीति में सबसे बड़े दांव-पेच को दिखाने में सक्षम है। लोगों के चेहरे पर रेणु के कहानी पंचलैट वाली फीलिंग है, गहरे रंगों का प्रयोग चित्र को गहराई युक्त बना देता है। आपके अधिकतर चित्रों में ऐसे ही रंग और परिवेश दिखाई पड़ते हैं। जीवन के अंतिम कुछ वर्ष लकवाग्रस्त अवस्था में बीता। पता नहीं बिना कुछ रचे कैसे रह पाते रहे होंगे आप, मन के तड़प को जब तक उड़ेल कर कृति में ना बदल दिया जाय रचनाकार को चैन कहाँ पड़ता है मतलब साफ है कि अंतिम समय बेचैनी में ही काटते हुए 2006 में बिकाश भट्टाचार्जी इस देह को त्यागकर किसी अनजान लोक में निकल गये, एक नये सफर पर, किसी नये कृति के खोज में। कलाकृति साभार गूगल से है।

चंद्रग्रहण: राहु लागे बैरी

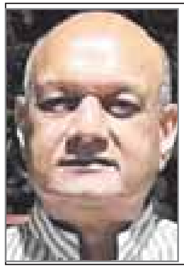

रमेश रंजन त्रिपाठी

मनुष्यों के संदर्भ में सूर्य का प्रकाश ज्ञानचक्षु, चंद्रमा मन और पृथ्वी यथार्थवाद का भौतिक स्वरूप है। जब जब ज्ञान के उजाले को मन और वास्तविकता तक पहुँचने में बाधा उत्पन्न होती हैं, तब तब अज्ञान रूपी राहु की छाया इंसानों को भयभीत करने का प्रयास करने लगती है। इस ग्रहण को न लगने देने का प्रयास निरंतर करना पड़ता है। राहु जैसे असुरों से बचने का उपाय गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में बताया है- बक्र चंद्रमहि ग्रसइ न राहू। अर्थात जब चंद्रमा में टेढ़ापन रहता है तब राहु भी उसे नहीं ग्रसता। इसलिए जरूरत अनुसार टेढ़ा बने रहना चाहिए, दुष्ट दूर रहेंगे।

रात में छिपकर पिया का साथ पाने के लिए आकाश में छटा बिखेरते चंद्रमा को 'बंदिनी', गुलजार साहब के शब्दों में बद्दुआ दे रही है कि 'तोहे राहु लागे बैरी'। चंद्रमा को ग्रहण लगना ही राहु लगना है। सृष्टि के अस्तित्व में आने पर पहली बार मयंक को खगोलीय घटनाओं के कारण ग्रहण लगा होगा, न कि किसी के कोसने से ! अब देखिए न, पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है और चंद्रमा धरती के चारों ओर घूमता है। सब जानते हैं कि जब सूर्य और चंद्रमा के बीच में धरती आ

जाती है तो उसकी छाया चांद पर पड़ने लगती है। इसी का नाम चंद्रग्रहण है। धरती और सूरज के बीच में चंद्रमा के आने पर सूर्यग्रहण होता है। इन बातों पर चांद, सूरज या किसी का कोई नियंत्रण नहीं है। भारतवासियों ने इस घटनाक्रम के लिए राहु नाम की आसुरी शक्ति को ज़िम्मेदार मान लिया। राहु का कोई भौतिक अस्तित्व नहीं है। वह सूर्य के परिप्रेक्ष्य में पृथ्वी और चंद्रमा के गमन पथ का प्रतिच्छेदन बिंदु है।

मनुष्यों के संदर्भ में सूर्य का प्रकाश ज्ञानचक्षु, चंद्रमा मन और पृथ्वी यथार्थवाद का भौतिक स्वरूप है। जब जब ज्ञान के उजाले को मन और वास्तविकता तक पहुँचने में बाधा उत्पन्न होती हैं, तब तब अज्ञान रूपी राहु की छाया इंसानों को भयभीत करने का प्रयास करने लगती है। इस ग्रहण को न लगने देने का प्रयास निरंतर करना पड़ता है। राहु जैसे असुरों से बचने का उपाय गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में बताया है- बक्र चंद्रमहि ग्रसइ न राहू। अर्थात जब चंद्रमा में टेढ़ापन रहता है तब राहु भी उसे नहीं ग्रसता। इसलिए जरूरत अनुसार टेढ़ा बने रहना चाहिए, दुष्ट दूर रहेंगे।

विज्ञान का मानना है कि चंद्रग्रहण से धरती या उसके निवासियों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। ग्रहण के दौरान चंद्रमा का रंग लाल हो जाने का कारण यह है कि पृथ्वी के वायुमंडल से गुजरने वाली सूर्य की रोशनी बिखर जाती है और केवल लाल तरंगे चंद्रमा तक पहुंच पाती हैं। ऐसा ही सूर्योदय और सूर्यास्त के समय भी होता है इसलिए आकाश का रंग लाल हो जाता है। चूँकि सूरज और चाँद के बीच धरती आ जाती है इसलिए चंद्रमा पर छाया पड़ने लगती है। यही छाया आदिकाल से मानव मन में अनेक अनिष्ट के भय का संचार करती रही है। इंसान ने मन के डर को मिटाने के लिए उपाय गढ़े। इन तरीकों को अपनाने से मन में सकारात्मक विचार आते हैं तो इन्हें मानने में हर्ज क्या है? भारतीय परंपरा में चंद्रग्रहण के दौरान मंदिरों के पट बंद कर दिए जाते हैं, खान-पान से परहेज किया जाता है, गर्भवती महिलाएं बाहर नहीं निकलतीं, ईश्वर का ध्यान और स्मरण किया जाता है, इत्यादि।

ग्रहण को ज्योतिष शास्त्र में बहुत महत्व दिया जाता है। आसमानी पिंडों का अध्ययन खगोल विज्ञान है। किसी समय विशेष पर ग्रहों, तारों, नक्षत्रों की आकाशीय स्थिति का नक्शा, जिसे जन्मकुंडली का चार्ट कहते हैं, बनाकर मुहूर्त शोधन या भविष्यवाणी करने की परंपरा हजारों साल पुरानी है। धरती अपनी धुरी पर साढ़े तेईस डिग्री झुकी हुई है। इसे पश्चिम से पूर्व की ओर अपनी धुरी पर एक बार अर्थात् तीन सौ साठ डिग्री घूमने में चौबीस घंटे का समय लगता है। पृथ्वी के घूमने से दिन-रात होते हैं, मौसम बदलते हैं और कई प्राकृतिक घटनाएं होती हैं। हमारे ॠषियों ने आकाश में सभी ओर यानी तीन सौ साठ डिग्री मे फैले हुए तारों के उन समूहों को जो पृथ्वी पर असर डालते हैं, सत्ताईस नक्षत्रों में विभाजित किया। फिर सवा दो नक्षत्रों की एक राशि मानकर बारह राशियां बनाईं। इसीलिये एक राशि का मान तीस डिग्री होता है। मनीषियों ने ऐसे ग्रहों की पहचान की जो हमारी धरा को प्रभावित करते हैं। पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा के परिभ्रमण पथ के प्रतिच्छेदन बिंदु पर राहु और उसके ठीक सामने एक सौ अस्सी डिग्री पर केतु की कल्पना की गई। सात ग्रह सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि तो आकाश में दिखाई देते हैं क्योंकि उनका भौतिक अस्तित्व है परंतु राहु और केतु काल्पनिक बिंदु हैं जिन्हें ग्रह माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र में इन्हीं नौ ग्रहों को सभी बातों का कारक माना जाता है। किसी घटना या जीव के जन्म के समय पूर्व दिशा में क्षितिज पर जो राशि उदित हो रही होती है उसे जन्मकुंडली का पहला स्थान अर्थात् लग्न मानकर वामावर्त घूमते हुए चक्राकार बारह घर बनाए गए। पहले घर की राशि से आगे की राशियों को क्रमबद्ध तरीके से सभी बारह स्थानों पर स्थापित किया जाता है। उस समय विशेष पर जो ग्रह जिस राशि पर स्थित होता है उसे जन्मकुंडली में दर्शाया जाता है। नौ ग्रहों में चंद्रमा सबसे तेज गति से भ्रमण करता है इसलिए उसे मन का प्रतीक माना गया। मनुष्य के जीवन की अधिकांश बातों को मन ही संचालित करता है इसलिए जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि पर स्थित होता है वही उस जातक की राशि होती है और ज्योतिष शास्त्र में उसका बहुत महत्व है।

चंद्रग्रहण के समय चंद्रमा कुंभ राशि में रहेगा। इसलिए कुंभ राशि के जातकों के लिए चंद्रग्रहण के समय सावधानियाँ बरतने की सलाह दी जा रही है। ब्लड मून अर्थात् पूर्ण चंद्रग्रहण खूबसूरत और अद्भुत प्राकृतिक खगोलीय घटना है जिसका भरपूर आनंद लेते समय विद्वानों द्वारा बताई गई सावधानियों का पालन अवश्य करना चाहिए।

काश्मीर की पहली महिला गायिका पर रोचक फिल्म

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

सॉन्स ऑफ़ पैराडाइज़ एक धीमी और शान्त फिल्म है, जो कलाकारों के उत्कृष्ट अभिनय कर्णप्रिय संगीत और कश्मीरी संस्कृति के मनोरमव चित्रण के लिए सराही जा रही है। यद्यपि, कहानी की धीमी गति और गहराई की कमी इसे सभी दर्शकों को प्रभावित नहीं कर पाती है विशेष रुप से उन दर्शकों जो तेज और भावनात्मक संघर्ष वाली फिल्में पसंद करते हैं । उन्हें यह फिल्म रंचमात्रभी प्रभावित नहीं करेगी । यह फिल्म कश्मीर की पहली महिला गायिका राज बेगम के जीवन पर

आधारित एक संगीत-प्रधान रोचक फिल्म है, जिसकी कहानी अपनी धीमी गति और संवादात्मक शैली के कारण आकर्षक है । खासकर सबा आज़ाद और सोनी राज़दान के अभिनय के कारण। एक गायिका के जीवन पर आधारित इस फिल्म का सबसे मज़बूत पक्ष उसका संगीत हो यह अपेक्षित था और ऐसा ही है भी । कश्मीर की स़स्कृति का चित्रण मनोरम नैसर्गिक सौंदर्य और सांगीतिक पार्श्व से और भी निखरता है।

सबा आज़ाद और सोनी राज़दान ने अपने अभिनय से फिल्म को आगे बढ़ाया है, जो कश्मीरी संस्कृति और आवाज़ के बीच सेतु का काम करती है ।फिल्म में राज बेगम के गीतों और कश्मीरी संस्कृति के चित्रण की प्रशंसा की गई है, जो आतंकवाद से ग्रस्त बॉलीवुड में कम ही देखने को मिलता है। फिल्म अपनी धीमी और मधुर लय में कहानी को बढ़ाती है , जिसमें दिखावटीपन नहीं है, और यह फिल्म उन दर्शकों के लिए है जो कहानी कहने में ईमानदारी को महत्व देते हैं। इस फिल्म का सबसे सकारात्मक पक्ष यह है कि फिल्म कश्मीरी आख्यानों से जुड़े क्रोध और हिंसा का प्रतिरोध करती है, और विजय के एक क्षण को संयमित स्मृति से प्रस्तुत करती है। जबकि फिल्म का सबसे नकारात्मक पहलू यह कि फिल्म में अपेक्षित गहराई नहीं है जो व्यापक वास्तविकताओं को पिरोने में सक्षम हो । यह फिल्म ज़ेबा के अन्दर की ख्वाहिशों या संघर्षों का गहरा चित्रण नहीं है, जिससे उसका चरित्र पूरी तरह से उभर नहीं पाता है।

यह फिल्म राज बेगम नाम की कश्मीरी गायिका के जीवन से प्रेरित है जिन्हें संगीत नाटक अकादमी अवार्ड और पद्मश्री भी मिला। लेखक-निर्देशक दानिश रेंज़ू इससे पहले कश्मीर की उपेक्षित औरतों पर - ' हॉफ विण्डो ' नाम से एक फिल्म बना चुके हैं। इस फिल्म में भी उन्होंने हालांकि ज़िक्र - ' कश्मीर की औरतों ' का किया है लेकिन दिखाया सिर्फ ' कश्मीर की मुस्लिम औरतों ' को है। पचास के दशक में क्या कश्मीर में मुस्लिमों के अलावा बाकी लोग नहीं थे? फिल्म यह भी बताती है कि किसी समय ॠषि-मुनियों की और बाद में सूफी संगीत की धरती कहे जाने वाले कश्मीर में काफी पहले ही कट्टरपंथियों का ऐसा बोलबाला हो चुका था कि वे गाने-बजाने वाली किसी लड़की को अपने मुशाअरे में सहन तक नहीं कर पा रहे थे। हालांकि लेखक-निर्देशक ने बहुत चतुराई से ऐसी बातें उभारे बिना सिर्फ नूर बेगम की ही कहानी पर ही अपना फोकस रखा है। लेकिन नूर की कहानी भी उन्होंने बहुत 'सूखे' तरीके से दिखाई है।

एक वास्तविक चरित्र राज बेगम पर बनी इस फिल्म में एक छद्म नाम - नूर बेगम का इस्तेमाल किए जाने से इसका प्रभाव फीका हुआ है। शायद इसी से पहली नज़र में प्रेरक लगने वाली यह कहानी उतनी प्रेरक बन नहीं पाई है जितनी यह होनी चाहिए थी या हो सकती थी।

नूर अपनी हिम्मत से ज़्यादा अपने आसपास वालों की मदद से आगे बढ़ती हुई दिखाई गई है। फिल्म की पटकथा इस किस्म की है कि यह कचोटने, चुभने या भावुक करने की बजाय सपाट तरीके से अपनी बात रखती है और यही कारण है कि इसे देखते हुए किसी किस्म का लगाव या नाता नहीं बन पाता है। फिल्म की एक बड़ी खासियत यह है कि सैंसर से हिन्दी भाषा का सर्टिफिकेट लेकर पास हुई इस फिल्म में आधे से ज़्यादा संवाद कश्मीरी में हैं। गाने बहुत सारे हैं और सारे के सारे कश्मीरी में हैं जो सुनने में प्यारे लगते हैं। लेकिन बेहतर होता कि यह फिल्म कश्मीरी भाषा में ही आती।

डॉ. कर्णावट तमिलनाडु हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित

भोपाल। तमिलनाडु हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा चेन्नै के श्री कन्यका परमेश्वरी कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के सभागृह में आयोजित हिंदी- तमिल संगम एवं वैश्विक हिंदी पत्रकारिता के राष्ट्रीय सेमिनार में भोपाल के सुप्रसिद्ध लेखक एवं वक्ता डॉ. जवाहर कर्णावट को वैश्विक हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया ।इस कार्यक्रम में हिंदी भाषा एवं साहित्य में योगदान देने वाले तमिल भाषी विद्वानों तथा पत्रकारों का भी अभिनंदन किया गया। श्रीमती आर. पार्वती को अनुवाद, श्रीमती पी. भाग्यलक्ष्मी को हिंदी प्रचार, डॉ. मीणा कृष्ण को हिंदी साहित्य , श्रीमती कुट्टी पद्मिनी को हिंदी फिल्मों एवं टीवी सीरियल तथा हिंदी पत्रकारिता में योगदान के लिए श्री विजय राघवन तथा डॉ. टी. राघवन को भी सम्मानित किया गया ।इस अवसर पर चार लेखकों की हिंदी पुस्तकों तथा हिंदी की प्रख्यात लेखिका सूर्य बालाजी की हिंदी रचनाओं की तमिल में अनुवादित पुस्तक का लोकार्पण भी हुआ इस सम्मेलन में चेन्नई के अलावा कोयंबतूर, पांडिचेरी, मैसूर ,बेंगलुरु आदि स्थानों के हिंदी विद्वान भी सम्मिलित हुए।

ऑरो मंदिर में गीता वार्ता माला आज

भोपाल। श्री अरविन्द सोसायटी भोपाल मासिक गीता वार्ता-माला का शुभारम्भ कर रही है। गीता वार्ता माला का पहला सत्र 7 सितंबर रविवार को शाम 5.30 बजे ऑरो मंदिर, तुलसी नगर में आयोजित किया गया है। इस सत्र में गीता मर्मज्ञ सेवानिवृत्त आईएएस ओमप्रकाश श्रीवास्तव भगवद्गीता के दार्शनिक एवं व्यावहारिक आयामों पर व?याख?यान देंगे। इस वार्ता-माला के प्रथम सत्र में वे योगः कर्मसु कौशलम् शीर्षक के अंतर्गत गीता के द्वितीय अध्याय पर अपनी गहन विवेचना प्रस्तुत करेंगे। गीता मर्मज्ञ ओपी श्रीवास्तव ने बीते चार दशकों से भगवद्गीता के अध्ययन, अध्यापन तथा प्रचार-प्रसार में अपना जीवन समर्पित किया है।

आदि कर्मयोगी अभियान के अन्तर्गत 84 ग्राम के प्रतिभागियों को किया प्रशिक्षित

बैतूल। जनजातीय कार्य विभाग के सहायक आयुक्त ने बताया कि आदि कर्मयोगी अभियान के अन्तर्गत बैतूल जिले में जनपद स्तरीय ब्लाक प्रोसेस लैब का आयोजन 1 सितंबर से 16 सितंबर तक सभी 10 जनपद पंचायतों के चयनित 554 ग्रामों में प्रारम्भ है। इसमें ब्लाक स्तरीय मास्टर टेनर्स द्वारा चयनित प्रत्येक गांव से ग्राम केडर के प्रतिभागियों को 2 दिवसीय प्रशिक्षण में प्रशिक्षित किया जाएगा। अभियान के तहत 5 और से 6 सितंबर को दो दिवसीय जिले के चयनित 554 ग्रामों में से 84 ग्राम के जिसमें जामदेहीकला, कान्हेगांव, हरदोली, धाबा, डेडवाकुण्ड, गदराझिरी, माजरवानी एवं बोरपेड आदि सभी 10 जनपद पंचायतों के ग्रामों के प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण उपरांत चयनित ग्रामों में जाकर अभियान के संबंध में ग्रामवासियों को जानकारी प्रदान करेंगे तथा 4 बैठकों के माध्यम से सामुदायिक भागीदारी द्वारा गांव का सामाजिक एवं संसाधन मानचित्रण, ट्रांजेक्ट वॉक, गांव का विजन प्लान का निर्माण कर ग्राम सभा में अनुमोदन करवाएंगे। इसके अलावा चयनित प्रत्येक गांव में सेवा केन्द्र की स्थापना की जाएगी। इसके बाद चयनित प्रत्येक गांव में सेवा केन्द्र की स्थापना की जाएगी। यह प्रशिक्षण ब्लाक स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स की 44 टीमों द्वारा 16 सितंबर तक अलग-अलग ग्रामों के केडर को प्रदान किया जाएगा। कलेक्टर द्वारा सभी जनपद पंचायत स्तर पर स्वयं उपस्थित होकर आदि कर्मयोगी अभियान की समीक्षा की जाएगी।

श्री सांवरिया सेठ मंदिर में श्रीमद् भागवत कथा के छठवें दिवस रुक्मणी हरण और कृष्ण-रुक्मणी विवाह का वर्णन

धार। श्री सांवरिया सेठ मंदिर में चल रही श्रीमद् भागवत कथा के दौरान, छठवें दिवस की कथा व्यास पीठ पर विराजित पंडित मनीष दुबे ने रुक्मणी हरण और कृष्ण-रुक्मणी विवाह का वर्णन किया।

रुक्मणी विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री थी। वह अत्यंत सुंदर और गुणवान थी। भगवान श्री कृष्ण ने रुक्मणी के स्वयंवर में भाग लेने का निर्णय किया, लेकिन रुक्मणी के भाई रुक्मी ने श्री कृष्ण को अपमानित करने के लिए शिशुपाल का समर्थन किया।

जब रुक्मणी ने यह सुना कि श्री कृष्ण स्वयंवर में भाग ले रहे हैं, तो उसने भगवान श्री कृष्ण को एक पत्र लिखा और उनसे अपनी इच्छा व्यक्त की कि वह उनसे विवाह करना चाहती है। भगवान श्री कृष्ण ने रुक्मणी के पत्र को पढ़ा और स्वयंवर के दिन रुक्मणी का हरण करने का निर्णय किया।

भगवान श्री कृष्ण ने रुक्मणी का हरण किया और उसे अपने रथ पर बिठाकर द्वारिका ले गए। रुक्मणी के भाई रुक्मी ने उनका पीछा किया, लेकिन भगवान श्री कृष्ण ने उसे पराजित किया।

द्वारिका में भगवान श्री कृष्ण और रुक्मणी का विवाह बड़े धूमधाम से मनाया जाता है वैसा ही विवाह सांवरिया सेठ मंदिर में भी मनाया गया, इसके पूर्व मंदिर में उपस्थित महिलाओं के द्वारा आपस में एक दूसरे को मेहंदी लगाई गई और उपस्थित जन

समुदाय को हल्दी रस्म भी की गई। भगवान श्री कृष्ण ने रुक्मणी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया और उसे सभी सुख-सुविधाएं प्रदान कीं।

कथा वाचक पंडित दुबे नेभगवान श्री कृष्ण और रुक्मणी की कथा से हमें क्या प्रेरणा मिलती है इसके बारे में बताते हुए कहा कि कि सच्चे प्रेम और विश्वास के साथ हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। भगवान श्री कृष्ण ने रुक्मणी की इच्छा का सम्मान किया और उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया, जो उनके प्रेम और समर्पण को दर्शाता है।

इस प्रसंग में भगवान कृष्ण का रूप सुश्री मेघना उपाध्याय और रुक्मणी का रूप सुश्री अवनी शर्मा ने धारण किया था। रुक्मणी हरण के मंचन के समय जैसे ही भगवान कृष्ण रुक्मणी को लेकर भागे, भक्तों ने तालियों से उनका स्वागत किया।

18 महापुराण समिति के समिति प्रमुख अशोक मनोहर जोशी संतोष पांडे दशरथ सिगा ओम प्रकाश सोलंकी आदि सदस्य भगवान को ढोल-नगाड़ों के साथ कृष्ण और रुक्मणी को को सम्मान के साथ मंदिर में लेकर आए विवाह मंदिर में हुआ। लोग भाव विभोर होकर नाचने लगे महिलाएं मंगल गान करने लगी और कथा के , पूरा हॉल फूलों की वर्षा और ढोल-ताशों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस तरह भगवान का विवाह धूमधाम से संपन्न हुआ, जिसने सभी भक्तों को भावविभोर कर दिया।

कथा के मध्य में व्यास पीठ पर विराजित पंडित मनीष दुबे के परिवार के सदस्यों एवं बाहर से पधारे हुए अतिथियों का स्वागत 18 महापुराण समिति के अध्यक्ष स्वयं प्रकाश सोनी समिति प्रमुख अशोक मनोहर जोशी संतोष पांडे सरोज सोनी , मीना दुबे के द्वारा किया गया । इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में सामाजिक कार्यकर्ता राखी राय का भी स्वागत सुंदर उपाध्याय, अनिल उपाध्याय मां कालिका माता मंदिर के पुजारी एवं उनकी धर्म पत्नी एवं स्वर्गीय मुरली उपाध्याय मित्र मंडल के द्वारा किया गया। जानकारी 18 महापुराण समिति के मीडिया प्रभारी डॉक्टर अशोक शास्त्री द्वारा दी गई।

बारहवे तीर्थंकर भगवान वासपूज्य स्वामी का मोक्ष कल्याणक पर्व मनाया

धार। दिगम्बर जैन समाज के पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के दसवे दिन बारहवे तीर्थंकर भगवान वासपूज्य स्वामी का मोक्ष कल्याणक लाडू चढ़ाकर मनाया गया शांतिनाथ मंदिरजी में श्रीजी के प्रथम अभिषेक करने का शौभाग्य विनयजी छाबड़ा बगड़ी परिवार शांतिधारा करने का लाभ डॉ पवनजी जैन आशीषजी सिंघाई निर्वाणलाडू चढ़ाने का पदमचंद जी जैन सागर वालो को मिला।

संत सदन में समवशरण मंडल विधान के समक्ष परम पूज्य गुरुदेव विभंजन सागर जी ससंघ के सानिध्य में प्रथम अभिषेक व शांतिधारा करने का लाभ चक्रवर्ती राजेंद्र लक्ष्मी बांझल परिवार एवं प्रेमचंदजी जैन उज्जैन नरेश कुमार श्रेणिक कुमार गंगवाल डॉ पवन जैन पद्मचंदजी जैन सागर वालो ने प्राप्त किया। मुनिश्री के पाद प्रक्षालन व निर्वाण लाडू चढ़ाने का सौभाग्य विमलचंदजी प्रवीणजी नवीन गोधा परिवार को मिला। आज पर्यूषण पर्व के अंतिम दिन उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म का मनाया गया। प्रातः तत्पश्चात गुरुदेव की दिव्या देशना उत्तम ब्रह्मचर्य पर हुई ! गुरुदेव ने अपनी देशना में बताया कि ब्रह्मचर्य तन से ही मन से भी होना बहुत जरूरी है । उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म जैन धर्म के 'दशलक्षण पर्व' में से एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जिसका अर्थ है आत्मा में रमण करना, इंद्रियों पर नियंत्रण रखना और वासनाओं से मुक्ति प्राप्त कर शुद्ध एवं संयमित जीवन जीना। इसमें सिर्फ यौन संयम ही नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी शुद्धता और पवित्रता को महत्व दिया जाता है। इस धर्म का पालन करने से व्यक्ति आत्म-नियंत्रण, इच्छा शक्ति और ज्ञान के विकास की ओर बढ़ता है, जो अंततः आत्मा के मोक्ष का मार्ग खोलता है।

दोपहर में मुनि श्री के सानिध्य श्री जी शोभा यात्रा निकाली गई ।

जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी संजय गंगवाल ने बताया कि पर्युषण पर्व पर मुनिश्री की प्रेरणा से शिवानी रावका , प्रभा गोधा जयपुर निवासी महावीर जी लुहाड़िया ने अपनी दस दिवसीय तपस्या की साथ ही समाज में सदस्यों द्वारा तीन दिवसीय तप आराधना भी की गई और 108 सदस्यों ने एक दिन का सामूहिक निर्जल उपवास किया।

सप्रे संग्रहालय में भारतीय भाषा अनुष्ठान 14 व 15 सितंबर को

भोपाल। माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं वीर भारत न्यास के तत्वावधान में इस वर्ष भी 14 व 15 सितंबर को भारतीय भाषा अनुष्ठान का आयोजन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत दो दिनों तक विभिन्न भाषाओं के विद्वान इस भाषा समागम में मंथन करेंगे। अंतिम दिन शाम को राष्ट्रीय अलंकरण समारोह होगा, जिसमें मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव होंगे।

अनुष्ठान के संयोजक एवं सप्रे संग्रहालय के संस्थापक निदेशक विजयदत्त श्रीधर एवं वीर भारत न्यास के सचिव श्रीराम तिवारी ने बताया कि भारतीय भाषा अनुष्ठान का शुभारंभ 14 सितंबर रविवार को सुबह 10ः30 बजे होगा। इस सत्र के मुख्य अतिथि हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के एवं राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के अध्यक्ष आचार्य डॉ. सूर्यप्रकाश दीक्षित होंगे। अध्यक्षता पद्मश्री एवं गुजरात साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ.विष्णु पंड्या करेंगें। प्रस्तावना विजयदत्त श्रीधर रखेंगे। इस सत्र में कन्नड भाषा की विद्वान डॉ. उषारानी राय बेंगलुरू ' कन्नड और हिंदी का अंतरसम्बन्ध' विषय पर, मलयालम विद्वान आचार्य डॉ. के. वनजा तिरूवनंतपुरम् 'मलयालम और हिंदी का अंतरसम्बन्ध' विषय पर, तेलुगू विद्वान डॉ. पी. मणिक्यांबा हैदराबाद ' तेलुगू और हिंदी का अंतरसम्बन्ध' विषय पर, बांगला विद्वान आचार्य डॉ.कृपाशंकर चौबे वर्धा, बांग्ला और हिंदी का अतंरसम्बन्ध' विषय पर तथा तमिल विद्वान डॉ. गोविंद राजन् प्रयागराज तमिल और हिंदी के अंतरसम्बन्ध पर वक्तव्य देंगे। सत्र का समाहार आचार्य प्रभुदयाल मिश्र करेंगे। संचालन वरिष्ठ पत्रकार, संपादक अजय बोकिल करेंगे।

इसी दिन अपरान्ह के सत्र में हिंदी नाटक, सिनेमा, नृत्य संगीत आदि पर चर्चा होगी। अपरान्ह 3 बजे प्रारंभ होने वाले इस सत्र के मुख्य अतिथि महर्षि पाणिनी संस्कृत विश्वविद्यालय उज्जैन कुलगुरू आचार्य डॉ.शिवशंकर मिश्र होंगे। इस सत्र में कालिदास सम्मान से सम्मानित नाट्य निदेशक एवं अभिनेता राजीव वर्मा 'नाटक और सिनेमा की भाषा' पर, जाने माने कला समीक्षक व उद्घोषक विनय उपाध्याय 'नृत्य और संगीत की भाषा' पर, आचार्य डॉ. मंजू तिवारी 'भाषा और संस्कृति' पर, मप्र जनजातीय संग्रहालय के निदेशक डॉ. धर्मेन्द्र पारे 'जनजातीय एवं घुमंतू भाषा संचार पर वक्तव्य देंगे। संचालन आकाशवाणी के पूर्व समाचार संपादक विनोद नागर करेंगे। इसी शाम बहुभाषी कवि सम्मेलन भी होगा।

अनुष्ठान के दूसरे दिन 15 सितंबर सोमवार को तीन सत्र होंगे। पूर्वान्ह सत्र में सुबह 10ः30 बजे हिंदी की प्राणधारा लोकभाषाओं पर चर्चा होगी। इस सत्र के मुख्य अतिथि प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री इंदरसिंह परमार होंगे। मुख्य वक्ता होंगे, आचार्य डॉ. सूर्य प्रकाश दीक्षित। इस सत्र में आचार्य डॉ. रामबहादुर मिश्र बाराबंकी 'खड़ी बोली हिंदी में अवधी, ब्रज, भोजपुरी का अवदान' विषय पर, आचार्य डॉ. सरोज गुप्ता सागर 'खड़ी बोली हिंदी में बुंदेली का अवदान' विषय पर, डॉ. शिव चौरसिया ' खड़ी बोली हिंदी में मालवी का अवदान' विषय पर, डॉ. सुधीर शर्मा, रायपुर 'खड़ी बोली हिंदी में छत्तीसगढ़ी का अवदान' विषय पर तथा जयराम शुक्ल रीवा खड़ी बोली में बघेली का अवदान' विषय पर वक्तव्य देंगे। संचालन आचार्य डा. शोभा जैन इंदौर करेंगी।

इसी दिन अपरान्ह सत्र 2ः30 पर प्रारंभ होगा। इसकी अध्यक्षता माखनलाल चतुर्वेदी रा. प. एवं संचार विवि के कुलगुरू विजय मनोहर तिवारी करेंगे। इस सत्र में डॉ. मुकेश मिश्र निदेशक दत्तोपंत ठेंगडी शोध संस्थान भोपाल ' पुरावृत्त की भाषा' विषय पर, डॉ. जवाहर कर्नावट 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य' विषय पर, आचार्य डॉ. संजय द्विवेदी ' समाचार माध्यमों की भाषा' विषय पर तथा डॉ. नुसरत मेंहदी ' हिंदी और उर्दू की साझा विरासत' विषय पर वक्तव्य देंगी। सत्र संचालन वरिष्ठ पत्रकार शिवकुमार विवेक करेंगे।

अलंकरण समारोह भी- इसी दिन शाम को अनुष्ठान का समापन समारोह के साथ प्रतिष्ठित राष्ट्रीय अलंकरण समारोह भी होगा। अपरान्ह 4 बजे से होने वाले इस समारोह के मुख्य अतिथि प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव होंगे। अध्यक्षता संस्कृति मंत्री धर्मेन्द्र लोधी करेंगे। समारोह का शुभारंभ डॉ. रामवल्लभ आचार्य विरचित भाषा गीत ' ऐसी अपनी बोलियां' के गायन से होगी। स्वागत वक्तव्य वीर भारत न्यास के सचिव श्रीराम तिवारी देंगे। इस अवसर पर विजय दत्त श्रीधर भाषा संकल्प प्रस्तुत करेंगे। उसके पश्चात राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत विभूतियों का सम्मान होगा। समाहार आचार्य प्रभुदयाल मिश्र करेंगे। संचालन विनय उपाध्याय करेंगे।

महाआरती में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़, गाजे-बाजे से निकली झांकियां

अगले बरस तू जल्दी आ, के जयकारों के साथ विदा हुए भगवान गणेश

बैतूल। गणपति बप्पा मोरिया, अगले बरस तू जल्दी आ, जैसे जयघोष लगाते हुए शनिवार को भक्तों ने भगवान गणेश की प्रतिमाओं का विसर्जन किया। प्रतिमाओं के विसर्जन का यह दौर सुबह से शुरू हो गया था और देर रात तक चलते रहा। इस दौरान प्रशासन ने प्रतिमा विसर्जन घाटों पर पुख्ता इंतजाम किए थे। सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए गोताखोर और विशेष बल तैनात किया गया था। वहीं भक्त झांकी बनाकर भगवान गणेश की प्रतिमा को नाचते हुए विसर्जन घाट लेकर पहुंचे। भगवान गणेश को विदाई देते समय लोगों की आंखे भी नम हो गई। बच्चे-बड़े हाथ जोडकर भगवान गणेश से सुख-समृद्धि की कामना करते नजर आए। भक्तों ने भगवान गणेश को अगले बरस जल्दी आने का न्योता भी दिया। अनंत चतुर्थी के अवसर पर सबसे ज्यादा खुशी बच्चों में दिख रही थी तो सबसे ज्यादा निराश भी बच्चे ही नजर आए।

अंतिम आरती में शामिल हुए भक्त- अनंत चतुर्थी पर विसर्जन पूर्व भगवान गणेश की आरती की गई। इस महाआरती में सैकड़ों की संख्या में भक्तों ने पहुंचकर आरती का लाभ लिया। ढोलक-मंजीरे के साथ एक स्वर में सभी ने भगवान गणेश की वंदना करते हुए सुख-समृद्धि की कामना की। भक्तों ने भगवान गणेश के सामने शीश नवाकर सद्बुद्धि, घर में सुख-समृद्धि की कामना करते हुए अगले बरस जल्दी आने का न्योता भी दिया। बच्चों के सबसे प्रिय भगवान गणेश के अंतिम दर्शन करने के लिए सड़कों पर लोगों का तांता लगा रहा।

नाचते हुए निकले भक्तगण- शनिवार को नाचते हुए भक्तों ने झांकी निकाली। ट्रक एवं ट्रैक्टर-ट्रॉली पर झांकी बनाकर भक्तों ने गणेश प्रतिमाएं रखी। जिसे देखने के लिए हजारों की संख्या में लोगों का हुजूम लगा रहा। झांकी के सामने बैंड बाजे की धुन पर भक्त नाच रहे थे, तो वहीं मुक्तकंठ से लंबोदर भगवान के जयकारे लगा रहे थे। रंग-गुलाल उठाते हुए भगवान गणेश की प्रतिमा को भक्त विसर्जन स्थल की ओर पहुंचते रहे।

घाटों पर रही सुरक्षा व्यवस्था- प्रतिमा विसर्जन घाटों पर प्रशासन ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम कर रखे थे। घाटों पर विशेष बल तैनात किया गया था तो वहीं किसी प्रकार की कोई अप्रिय घटना न हो इसके लिए गोताखोर के इंतजाम भी किए गए थे। इसके अलावा शहर में भी संवेदनशील स्थानों पर पुलिस का पहरा लगा हुआ था। जबकि कुछ स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे भी लगाए गए थे ताकि उपद्रवियों पर नजर रखी जाए। थाना प्रभारी सहित प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा शहर में सुरक्षा व्यवस्था का लगातार जायजा लिया गया।

जोरदार जयकारे के साथ दी गणपति बप्पा को विदाई

बैतूल। भाजपा जिला कार्यालय विजय भवन कॉम्प्लेक्स में विराजित विघ्नहर्ता भगवान गणपति बप्पा को आज अनंत चर्तुदशी के सुअवसर पर जोरदार जयकारों के साथ धूमधाम से विदाई दी गई। दोपहर में पूजन आरती के पश्चात शुभ मुहूर्त में भगवान गणेश जी का विवेकानंद वार्ड स्थित माचना घाट फिल्टर

प्लांट पर पहुंचकर विधि विधान के साथ विसर्जन किया गया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार , पूर्व जिलाध्यक्ष वसंत बाबा माकोडे, आदित्य बबला शुक्ला, जिला महामंत्री कृष्णा गायकी, डा. महेंद्रसिंह चौहान, उपाध्यक्ष इंद्रपाल पुण्डे, आनंद प्रजापति, नरेश फाटे, कमलेश राठौर, पार्वती बारस्कर, आनंद प्रजापति, राजेश शर्मा, महेश राठौर, कैलाश धोटे, मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा, विक्रम वैद्य, मीडिया प्रभारी सुर्यदीप त्रिवेदी, पवन यादव, सतीश बडोनिया, पिंटू महाले, मुकेश झारे, रवि सोनी, मोहन साकरे, मोनू सोनी, विजय खातरकर, बिरजू पारखे, सुरज टोण्पे, मोहित बतरा, वृदावन यादव, किरण टोणपे, विशाल ठाकुर, राकेश सातपुते, जितेन्द्र पंवार सहित बडी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता पदाधिकारी मौजूद रहे।

आरपीएफ कोर्ट ने 276 लोगों से साढे तीन लाख रुपये से अधिक का जुर्माना वसूला

बैतूल। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) थाना बैतूल ने रेलवे स्टेशन परिसर में रेलवे कोर्ट भोपाल का शिविर लगाकर 276 व्यक्तियों से 3 लाख 43 हजार 385 रुपये से अधिक का जुर्माना वसूला गया। जिसमें 153 व्यक्तियों से सर्वाधिक 1 लाख 80 हजार रुपए से अधिक की राशि जमा कराई गई। बैतूल थाना इस कार्रवाई में सर्वश्रेष्ठ रहा। कोर्ट शिविर में बैतूल के अलावा भोपाल, नर्मदापुरम, हरदा, इटारसी आमला,और जुन्नारदेव आरपीएफ थानों के मामलों का निपटारा किया गया। उक्त कार्यवाही मध्य रेलवे नागपुर के वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त मनोज कुमार के निर्देशन और सहायक सुरक्षा आयुक्त श्रीकुमार कुरूप के मार्गदर्शन में की गई। आरपीएफ बैतूल थाना प्रभारी राजेश बनकर ने आज शनिवार को जानकारी देते हुए बताया कि रेलवे कोर्ट भोपाल के न्यायाधीश अनुराग खरे की विशेष उपस्थिति में आरपीएफ थाना बैरक के सामने कोर्ट शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान आरपीएफ थाना बैतूल द्वारा रेलवे परिसर में अवैध रूप से प्रवेश करने, अवैध रूप से खाद्य सामग्री बेचने, महिला यात्री डिब्बे में प्रवेश करने, दिव्यांग यात्री डिब्बे में प्रवेश करने, फुटबोर्ड पर यात्रा करने, नो पार्किंग में वाहन खड़ा करने तथा रेलवे परिसर में गंदगी फैलाने पर रेलवे अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत सर्वाधिक 153 व्यक्तियों के विरुद्ध कार्रवाई कर 1 लाख 80 हजार 485 रुपए का जुर्माना वसूला गया। शिविर में 276 व्यक्तियों के विरुद्ध कार्रवाई कर 3 लाख 43 हजार 385 रुपए का जुर्माना वसूला गया। बैतूल थाना कार्रवाई में सर्वश्रेष्ठ रहा। इस कार्रवाई में थाना प्रभारी

अंबेडकर शिक्षा महाविद्यालय में मनाया शिक्षक दिवस

शाल-श्रीफल देकर किया शिक्षकों का सम्मान

बैतूल। बीआर अंबेडकर शिक्षा महाविद्यालय में पूर्व राष्ट्रपति, भारत रत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती के अवसर पर शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जेएच कालेज की प्रो. डॉ. अलका पांडे एवं विशेष अतिथि प्रो. डॉ. एसडी डोगरे तथा श्रीमती सुशीलादेवी अग्रवाल की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम माँ सरस्वती एवं डॉ. राधाकृष्णन की फोटो पर माल्यार्पण कर एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. पाण्डे द्वारा अपने उद्बोधन में शिक्षकों के आदर्शों पर विस्तृत चर्चा कर प्रकृति को सबसे बडा शिक्षक बताया। प्रो. डॉ. डोंगरे ने शिक्षक की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। बीआरए कालेज के प्राचार्य डॉ. देशमुख ने कहा कि शिक्षक विकास की धुरी है एवं शिक्षा संस्कार युक्त होना चाहिए, विषय पर प्रकाश डाला। महाविद्यालय प्रबंधन समिति संचालक इंजी. ध्रुवप्रकाश अग्रवाल एवं मोहन अग्रवाल द्वारा श्रीराम फार्मेसी कालेज की प्राचार्य श्रीमती रोशनी खातरकर एवं बीएड कालेज के प्राचार्य डॉ. जीडी देशमुख तथा दोनों कॉलेज के समस्त स्टाफ का शाल श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया।

तान्या मित्तल की नकली बातों की हंसी उड़ी

'बिग बॉस'

टीवी रिएलिटी शो 'बिग बॉस-19' इन दिनों अपनी एक कंटेस्टेंट और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर तान्या मित्तल की वजह से कुछ ज्यादा ही सुर्खियों में हैं। शो में तान्या अपने आपको जिस तरह प्रोजेक्ट कर रही है, उससे वे हंसी का पात्र ज्यादा बन रही। सोशल मीडिया पर भी वे ट्रेंड कर रही है। 500 साड़ियां, आधा किलो ज्वेलरी, खुद की बड़ी सी कोठी, पर्सनल सिक्योरिटी गार्ड और कुंभ मेले में हुई भगदड़ में लोगों की जान बचाने जैसी हवाबाजी वाली बातों से उनकी तारीफ नहीं हो रही, बल्कि खिल्ली ज्यादा उड़ रही है।

एकता शर्मा

ग्वालियर की रहने वाली तान्या मित्तल जहां एक तरफ अपने अंदाज से लोगों का मनोरंजन कर रही हैं, वहीं दूसरी तरफ उन्हें जानने वाले लोग उनकी आलोचना भी कर रहे। इन सबके बीच तान्या के परिवार ने पहली बार सोशल मीडिया पर एक इमोशनल स्टेटमेंट जारी किया है। उनके एक एक्स बॉयफ्रेंड ने भी तान्या की पोल खोली और कहा कि वे खुद की संतुष्टि के लिए दोस्त बनाती हैं। बिग बॉस-19 में अपनी बडबोली बातों, आलीशान जिंदगी जीने का दावा करने वाली तान्या मित्तल के एक्स बॉयफ्रेंड सामने आए। उन्होंने तान्या को नकली बताते हुए उनके असली व्यवहार के बारे में बात की। 'बिग बॉस' की शुरुआत के बाद कंटेस्टेंट ऑडियंस के बीच अपनी पहचान बनाने में लगे हैं। इस बीच जिस कंटेस्टेंट के सबसे ज्यादा चर्चे हो रहे, वो हैं सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और एंटरप्रेन्योर तान्या मित्तल।

घर के अंदर के उनके वायरल क्लिप्स खूब शेयर हो रहे हैं, जिसमें वे खुद को हाई-मेंटेनेंस बताते हुए कहती हैं कि उन्होंने कभी फ्रिज नहीं खोला है। स्वर्ग जैसा उनका घर है। 150 बॉडीगार्ड्स हैं और उन्हें खुद को बॉस कहलाना पसंद है। उनके घर में कोई सामान बाहर से नहीं आता। फॉर्म हाउस से सब्जियां और दूध आता है। इस बीच उनके एक्स बॉयफ्रेंड का एक वीडियो सामने आया है उन्होंने तान्या को एक नकली और बनावटी इंसान बताया है। एक्स बॉयफ्रेंड और कंटेंट क्रिएटर बलराज सिंह ने उनकी हाई-मेंटेनेंस लाइफ को झूठ बताया। बलराज ने अपने यूट्यूब वीडियो में कहा कि हमारी दोस्ती इसलिए नहीं चली। क्योंकि वो नकली है। तान्या संबोधित करते हुए कहा कि तुम्हारी सबसे बड़ी प्रॉब्लम है संतुष्टि। जब मन करता है, किसी को दोस्त बना लेती हो, उससे मन की बात कह देती हो और फिर उसे छोड़कर बदसलूकी करने लगती हो।

तान्या के उस दावे पर भी बलराज ने तंज कसा जिसमें उन्होंने कहा था कि वह सिर्फ चांदी के बर्तन में ही पानी पीती हैं। बलराज ने कहा कि ऐसा नहीं है। उन्होंने प्लास्टिक की बोतल में भी पानी पिया है और ग्लास में भी। हंसी-मज़ाक में कहा होगा, लेकिन अब असलियत सामने आने वाली है। इसके साथ ही बलराज ने ये भी कहा कि अगर उन्हें गेम में बने रहना है तो नकली पर्सनालिटी को छोड़कर असली पर्सनालिटी लोगों को दिखानी होगी। कुछ दर्शक तान्या को बड़बोली, तो कुछ झूठी का टैग दे रहे हैं। इस रियलिटी में वह आए दिन अपने बारे में काफी चीजें बताती रहती हैं। कभी वह कहती हैं कि उनका काफी बड़ा बिजनेस है, तो कभी वह कहती हैं कि ग्वालियर में उनकी फैन फॉलोइंग बहुत तगड़ी है।

पर, उनके इन सब दावों की पोल खुलने लगी है। असलियत यह कि तान्या को कोई सिक्योरिटी नहीं मिली। वो बस ऐसे ही अपने साथ भीड़ लेकर चलती है, हऊआ बनाया हुआ है। वे कह रही है कि मेरा बहुत बड़ा कारोबार है, फैक्ट्रियां हैं। जबकि, उसके भाई की एक छोटी सी फैक्ट्री गिफ्ट हैंपर की है। कपड़ों का कोई बिजनेस है जो ऑनलाइन चलाया है।

तान्या के खिलाफ जिस तरह का माहौल बना, उसके बाद परिवार ने भी एक बयान जारी कर कहा कि हमारी बेटी की जर्नी पूरी होने दीजिए। तान्या के माता-पिता ने बयान में कहा कि देश के सबसे बड़े रिएलिटी शो में अपनी बेटी तान्या को देखकर हमारे मन में कई तरह की भावनाएं उमड़ रही हैं। एक ओर, उसका लोगों का दिल जीतना हमें बेहद गर्व महसूस कराता है, लेकिन दूसरी तरफ, जब उसका बार-बार अपमान होता है, उसे निशाना बनाया जाता है, उसके बारे में गलत बातें बोली जाती हैं तो दुख भी पहुंचाता है।

तान्या के परिजनों ने हाथ जोड़कर यह भी कहा कि प्लीज, परिवार को इस बहस और ट्रोलिंग से बाहर रखें। उन्होंने लिखा कि सभी से हमारा सिर्फ एक निवेदन है, कृपया उसकी यात्रा पूरी होने तक उसे लेकर कोई भी फैसला या टिप्पणी करने से बचें। वह इतनी तो हकदार है। आपकी रील्स और आरोप भले ही आपको पब्लिसिटी दिला दें, लेकिन वे हमारे परिवार पर ऐसी गहरी चोट छोड़ जाते हैं जो पूरी उम्र तक रह सकती है इसलिए आपसे अनुरोध करते हैं कि हमें, यानी तान्या के परिवार को, इस विवाद से दूर रखें।

अपनी बात के अंत में परिवार ने लिखा है कि यह हमारे लिए बेहद कठिन समय है। हमने अपनी बेटी को सिर्फ प्यार में पाला है, कभी नहीं सोचा था कि इतनी नेगेटिविटी का सामना भी करना पड़ेगा। हर कठोर शब्द हमें भी उसी तरह काटता है, जिसे शायद आप समझ भी नहीं पाएंगे। हमारी बस कामना है कि इंसानियत और दया बनी रहे। जब तक वह घर में है, हम उसका साथ देने का वादा करते हैं प्यार और यकीन के साथ।

10 दिन भी नहीं चली अक्षय की ये फिल्म

विष्णु मांचू और अक्षय कुमार स्टारर 'कन्नप्पा' ओटीटी पर रिलीज हो गई। मुकेश कुमार सिंह के निर्देशन में बनी ये फिल्म इसी साल थिएटर में आई थी। लेकिन, सिनेमाघरों में फिल्म कुछ खास कर नहीं पाई और बुरी तरह फ्लॉप हुई। फिल्म की कहानी भगवान शिव के भक्त कन्नप्पा पर आधारित है। साउथ स्टार विष्णु मांचू ने इस फिल्म में 'कन्नप्पा' और अक्षय कुमार ने भगवान शिव का रोल निभाया। फिल्म में विष्णु मांचू और अक्षय कुमार के अलावा मोहनलाल, प्रभास, काजल अग्रवाल, मोहन बाबू और शरत कुमार जैसे स्टार्स भी शामिल हैं। रिलीज के वक्त फिल्म को खास पसंद नहीं किया गया। इसलिए मेकर्स ने फिल्म को ओटीटी पर रिलीज कर दिया।

27 जून 2025 को 'कन्नपा' को रिलीज किया। फिल्म ने पहले दिन 9.35 करोड़ रुपए की कमाई की। एक हफ्ते के बाद ये फिल्म कुछ नहीं कर पाई और 10 दिन में पूरी तरह ढेर हो गई। फिल्म ने देश में सिर्फ 31.93 करोड़ का कलेक्शन किया। फिल्म का बजट लगभग 200 करोड़ रुपये था। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर इस साल की सबसे बड़ी फ्लॉप साबित हुई।

'कन्नप्पा' 4 सितम्बर 2025 से अमेजन प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम हुई। यह जानकारी खुद फिल्म के लीड एक्टर विष्णु मांचू ने दी थी। पोस्ट शेयर करते हुए एक्टर ने लिखा था 'बलिदान और दिव्यता के एपिक के गवाह बनिए। कन्नप्पा 4 सितम्बर 2025 को प्राइम वीडियो पर डिजिटली रिलीज हो रही है। हर हर महादेव, हर हर महादेव।' कई लोगों को इस फिल्म का काफी दिनों से इंतजार था। अब इसे घर बैठे एंजॉय कर सकते हैं।

रियल बॉक्स

भव्य रूप में फिर परदे पर अवतरित होंगे राम

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

धार्मिक कथाओं में हिंदी सिनेमा का सबसे लोकप्रिय पात्र भगवान राम हैं। सवा सौ साल पहले सिनेमा के शैशव काल में फिल्मकारों ने रामकथा के सहारे ही अपनी नैया पार लगाई थी। क्योंकि, तब माइथोलॉजिकल कथाओं के जरिए ही दर्शकों को सिनेमाघरों तक लाया जाता था। यही वजह है कि भगवान राम की कथा को जनता तक पहुंचाने में सिनेमा के योगदान को बहुत बड़ा माना जाता है। बड़े परदे पर राम जी कि कथा का सिलसिला उस दौर में ही शुरू हो गया था, जब भारत में फिल्में बनना शुरू हुई। लेकिन, तब उनमें आवाज नहीं होती थी। हिंदी सिनेमा के पुरोधा कहे जाने वाले दादा साहेब फाल्के ने मूक फिल्मों के दौर में 1917 में 'लंका दहन' से राम नाम का जो पौधा लगाया था, उसे जीवी साने ने 1920 में 'राम जन्म' से आगे बढ़ाया। फिर वी शांताराम ने 1932 में 'अयोध्या का राजा' से इस परंपरा को गति दी, तो विजय भट्ट ने 1942 में 'भरत मिलाप' और 1943 में 'राम राज्य' से इसे सिनेमा के लिए एक आसान और दर्शकों का पसंदीदा विषय बना दिया।

बताते हैं कि दादासाहब ने जब सिनेमा हॉल में 'द लाइफ ऑफ क्राइस्ट' (1906) देखी, तो परदे पर जीसस के चमत्कार देखकर उन्हें लगा कि इसी तरह भारतीय देवताओं राम और कृष्ण की कहानियां भी परदे पर आ सकती हैं। इसी विचार के साथ उन्होंने 'मूविंग पिक्चर्स' के बिजनेस में कदम रखा। भारतीय माइथोलॉजी पर आधारित 'राजा हरिश्चंद्र' बनाने के बाद दादा साहब ने अपनी दूसरी फिल्म की कहानी के लिए रामकथा को चुना। सिनेमा में इस कथानक को उतारने की ये पहली कोशिश 'लंका दहन' जबरदस्त कामयाब हुई और बाद के सालों में इसने, हिंदी फिल्मों से लेकर साउथ तक के कई फिल्ममेकर्स को इस तरह की फिल्में बनाने के लिए प्रेरित किया।

देखा गया कि फिल्म इतिहास के हर दशक में किसी न किसी रूप में राम परदे पर अवतरित होते रहे हैं। शुरुआती दिनों में 'अयोध्या चा राजा' ने टॉकीजों में दर्शकों की श्रद्धा बरसाकर इस परंपरा को बढ़ाया। कहा जा सकता है कि सिनेमा में कोई चले या नहीं, राम का नाम हमेशा अपना असर दिखाता रहा। इसके बाद 1961 में बाबूभाई मिस्त्री की 'संपूर्ण रामायण' ने फिर दर्शकों को टॉकीज में सियाराम बुलवा दिया था। इस फिल्म में रावण और हनुमान को हवा में उड़ता दिखाकर, लंका दहन और राम-रावण युद्ध के युद्ध के दृश्य फिल्माकर दर्शकों को नया अनुभव दिया था। रावण की भूमिका बीएम व्यास ने रावण बनकर अपने आपको उस ज़माने का चर्चित खलनायक साबित किया था, जो आसान बात नहीं थी। राम, रामायण और हनुमान पर केंद्रित फिल्मों के इतिहास के बाद अब एक बार फिर बड़े परदे पर राम भगवान अवतरित हो रहे हैं। सिनेमा में राम को लेकर कई बार प्रयोग हुए हैं। राम, सीता और रावण की कहानी बरसों से सुनी और सुनाई जाती रही है। फिर भी इसे लेकर दर्शकों की उत्सुकता बनी है। इसलिए कि उसका प्रस्तुतीकरण हमेशा ही चौंकाने वाला रहा।

नितेश तिवारी की 4000 करोड़ की फिल्म 'रामायण' को लेकर क्रेज़ होने का कारण इसके कलाकारों के साथ इसका भव्य प्रस्तुतीकरण भी है। इसमें राम का किरदार रणबीर कपूर और रावण का दक्षिण के सितारे यश निभा रहे हैं। सनी देओल जैसे कलाकार का हनुमान का किरदार निभाना भी कम आश्चर्यजनक नहीं है। इस 'रामायण' फिल्म की पहली झलक को जिस तरह पसंद किया गया, वो इस बात का प्रमाण है, कि इस फिल्म के निर्माण का स्तर क्या होगा। इसके रिलीज हुए पहले टीजर में रणबीर कपूर और यश की पहली झलक देखने को मिली। दो हिस्सों में बनने वाली इस फिल्म का पहला हिस्सा अगले साल (2026) में परदे पर आएगा। नितेश तिवारी की इस फिल्म के बजट ने हर किसी को हैरानी में डाल दिया। फिल्म के प्रोड्यूसर नमित मल्होत्रा ने हाल ही में खुलासा किया कि इस मोस्ट अवेटेड माइथोलॉजिकल फिल्म का बजट 4000 करोड़ रुपए है। ये भारत की अब तक की सबसे महंगी फिल्म होगी। फिल्म से इतनी कमाई हो सकेगी या नहीं अभी इस बारे में संशय है। वैसे बॉक्स ऑफिस का फार्मूला है, कि किसी भी फिल्म को हिट होने के लिए उसे अपनी लागत से दोगुना कमाई करना होती है। यदि 'रामायणम' के बारे में बात की जाए को दोनों पार्ट्स को हिट होने के लिए 8000 करोड़ रुपए कमाना पड़ेंगे। लेकिन, जिस तरह फिल्म का निर्माण हो रहा है, ये आंकड़ा बड़ा नहीं लग रहा।

'रामायण' को इतने बड़े खर्च से बनाने का फैसला इसलिए आश्चर्य की बात है, कि फिल्म के मूल कथानक से देश का बच्चा बच्चा वाकिफ है। राम-रावण युद्ध का हर दृश्य दर्शक कई बार फिल्मों और सीरियल में देख चुके हैं। उसी को फिर फिल्माया जाएगा, वो भी बिना किसी बदलाव के। क्योंकि, भगवान राम जैसे किरदार की लोकप्रियता का आलम यह है कि फिल्म जगत के 112 साल के इतिहास में हर दशक में सिनेमा के परदे व टीवी पर किसी-न-किसी रूप में राम अवतरित होते रहे हैं। गिनती लगाई जाए, तो अभी तक 50 से ज्यादा फिल्में और 18 टीवी शो इसी रामकथा पर बन चुके हैं। इनमें 17 हिंदी में और तेलुगु में सबसे ज्यादा 18 फिल्में बनी। अभी तक देश में अलग-अलग भाषाओं में जितनी भी पौराणिक फिल्में बनी, उनमें राम-रावण युद्ध पर बनी फिल्में ही सबसे ज्यादा पसंद की गई। याद किया जाए तो रामानंद सागर के सीरियल 'रामायण' ने तो दर्शकों की श्रद्धा के रिकॉर्ड तोड़ दिए थे। 1980 व 1990 का दशक इसी सीरियल के नाम रहा।

रामकथा पर आधारित अधिकांश फिल्मों ने अच्छी कमाई की। 1917 में दादा साहब फाल्के के निर्देशन में बनी पहली फिल्म 'लंका दहन' (1917) देखने वाले दर्शकों की सिनेमाघर के बाहर कतार लगी रहती थी। मूक फिल्मों के दौर में भी रामकथा पर बनी 'लंका दहन' ऐसी फिल्म आई थी, जिसने दर्शकों की लाइन लगवाई थी। मुंबई के थिएटर्स में ये फिल्म 23 हफ्तों तक चली। इससे ऐसी कमाई हुई थी कि पैसों से लदे बोरे बैलगाड़ी पर प्रोड्यूसर के घर भेजे जाते थे। 'लंका दहन' में अन्ना सालुंके ने सिनेमा के इतिहास का पहला डबल रोल किया था। उन्होंने इस फिल्म में राम के साथ सीता का भी किरदार निभाया था। उन्होंने फिल्म में राम व सीता दोनों के किरदारों को अपने बेहतरीन अभिनय से जीवंत बनाया था। क्योंकि, उस दौर में महिलाओं का फिल्मों में काम करना अच्छा नहीं समझा जाता था। इसलिए महिलाओं के किरदार भी पुरुष निभाया करते थे। इससे पहले दादा साहब फाल्के की फिल्म 'राजा हरिशचंद्र' में अन्ना सालुंके तारामती का किरदार निभा चुके थे। यही वजह रही कि फाल्के ने सीता की भूमिका भी उन्हीं को सौंपी।

मूक फिल्मों के समय में राम का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं में 'राम राज्य' के हीरो प्रेम अदीब को सबसे ज्यादा पसंद किया जाता रहा। उनके फोटो पर भगवान की तरह माला चढ़ाई जाती थी। इसी तरह 'संपूर्ण रामायण' में राम का किरदार निभाकर महिपाल भी चर्चित हुए। फिल्मों के लंबे दौर के बाद दूरदर्शन पर 'रामायण' सीरियल में राम की भूमिका निभाने वाले अरुण गोविल को तो देशभर में राम के अवतार के रूप में ही देखा जाने लगा था। आज भी उनकी यही छवि है। 1997 में प्रसारित लोकप्रिय सीरियल 'जय हनुमान' में अभिनेता सिराज मुस्तफा खान ने भगवान राम का किरदार निभाया था। उन्हें भी लोगों ने पसंद किया। मूक फिल्मों के दौर में तो खलील अहमद भी 1920 से 1940 तक सक्रिय रहे। उन्होंने सती पार्वती, महासती अनुसुया, रुक्मिणी हरण, लंका नी लाडी और द्रौपदी जैसी फिल्मों में कृष्ण व राम के किरदार निभाए थे।

वर्ष 1942 में आयी भरत मिलाप और वर्ष 1943 में रिलीज हुई राम राज्य में प्रेम अदीब ने ही प्रभु राम की भूमिका निभाई थी। इन दोनों फिल्मों ने उनको उस दौर का एक सफल अभिनेता बनाया था। उनकी निभाई राम की भूमिका लोगों को बेहद पसंद आई। यही वजह रही कि इसके बाद रामायण की कथा पर बनी 6 फिल्मों रामबाण (1948), राम विवाह (1949), रामनवमी (1956), राम हनुमान युद्ध (1957), राम लक्ष्मण (1957), राम भक्त विभीषण (1958) जैसी फिल्मों में वे राम बने। प्रेम अदीब ने तो 'राम राज्य' की शूटिंग के दौरान नॉनवेज तक खाना छोड़ दिया था।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

शिक्षकों के किरदार से कोई सितारा नहीं बचा

अशोक जोशी

हमारे देश में सिनेमा और शिक्षा एक-दूसरे के पूरक समझे जाते हैं। सामाजिक विषयों से शिक्षा लेकर यहां फिल्में बनती है, तो सिनेमा से शिक्षा लेकर यहां सामाजिक

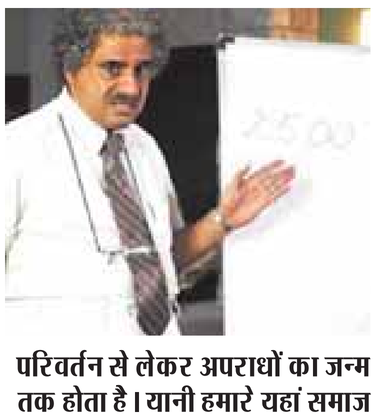

परिवर्तन से लेकर अपराधों का जन्म तक होता है। यानी हमारे यहां समाज और सिनेमा में सब कुछ संभव है। भारत, सिनेमा प्रधान देश है. यहां फ़िल्में बड़े पर्दे तक सीमित नहीं होती, बल्कि ये हमारी रोज़मर्रा का हिस्सा हैं। फ़िल्में हमारा मनोरंजन करती हैं तो हमें सीख भी देती हैं। वो हमारे सपनों को उड़ान देती है, हमें सपने देखना सिखाती है।

फ़िल्में हमारी वास्तवकिता का आईना हैं जिसके ज़रिए हम बहुत बार खुद से ही मिल रहे होते हैं। जिस तरह से समाज और शिक्षा में शिक्षक का उल्लेखनीय योगदान होता है, उसी तरह हिंदी फिल्मों के सितारों ने भी कई फिल्मों में शिक्षक की भूमिका निभाकर अपना योगदान दिया है। इन सितारों में गुजरे जमाने के सितारों से लेकर आज के युवा सितारे सभी शामिल हैं। फिल्मों में सितारे अपनी दमदार अदाकारी और अलग-अलग किरदारों से दर्शकों के दिल में अपनी खास जगह बनाते हैं। एक्शन, कॉमेडी से लेकर नेगेटिव किरदार तक वे इस खूबसूरती के साथ निभाते हैं कि फैंस उनके दीवाने हो जाते हैं।

इसी तरह सितारों ने पर्दे पर शिक्षकों का भी किरदार बखूबी निभाया है। किसी ने शिक्षक बन जिंदगी का सबक सिखाया तो कोई टीचर के रूप में अपने स्टूडेंट का सबसे अच्छा दोस्त बना। यदि गुजरे जमाने की बात की जाए तो इन फिल्मों में शिक्षक का किरदार समाज सुधारक या पीड़ित व्यक्ति के रूप में होता था। अधिकांश फिल्मों के शिक्षक अपने छात्रों को सामाजिक सुधार या देश प्रेम की शिक्षा देते थे। कुछ शिक्षकों के चेले या तो सुधरकर समाज को सुधारने में लग जाते थे। कुछ चेले राह भटक जाते थे, जिन्हें शिक्षक सही राह पर लाने का काम करते थे।

उस जमाने के कलाकारों में अभि भट्टाचार्य, मनमोहन कृष्ण से लेकर अशोक कुमार तक ने शिक्षक की भूमिका में रंग भरे। 'जागृति' के शिक्षक जब गाते हैं 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं' या 'गंगा जमुना' के शिक्षक जब 'इंसाफ की डगर पर बच्चों दिखाओ चल के' गाते हैं, तो पूरा देश उनके साथ गुनगुनाने लगता है। अशोक कुमार ने भी 'मासूम' और 'आंसू बन गए फूल' में शिक्षक की भूमिका में प्राण फूंके थे। सत्येन कप्पू ने कभी कॉलेज के तो कभी गांव के शिक्षक की भूमिका खूब निबाही। उसी दौर में श्रीराम लागू और गिरीश कर्नाड भी इस रोल में खूब फबे हैं। यहां तक कि सदाबहार रोमांटिक देव आनंद भी 'लश्कर' और 'मनपसंद' में स्टूडेंट के चहेते प्रोफेसर बन चुके हैं।

कभी हीरो स्वांग भर कर मजबूरी में शिक्षक बनता है तो कभी नायिका से प्यार जताने लिए मास्टर बनकर पर्दे पर हाजिर हो जाता है। शम्मी कपूर 'प्रोफेसर' में ऐसे ही नायक थे तो राज कपूर 'दिल ही तो है' में संगीत शिक्षक बनकर नूतन का दिल जीतने आते हैं। धर्मेंद्र और अमिताभ भी कई फिल्मों में शिक्षक बने हैं। 'चुपके चुपके' भी ऐसी ही फिल्म थी, जिसमें अमिताभ शिक्षक बनें। 'कसमें वादे' में वे ऐसे प्रोफेसर बने जो छात्रों का झगड़ा सुलझाते हुए मारे जाते हैं। अमिताभ बच्चन और रानी मुखर्जी की 2005 में फिल्म 'ब्लैक' आई थी, जिसमें अमिताभ बच्चन ने टीचर का रोल निभाया था। फिल्म में रानी मुखर्जी ने एक अंधी और बहरी लड़की का किरदार निभाया था। अमिताभ फिल्म में अंधी और बहरी लड़की यानी की रानी मुखर्जी को बोलना सिखाते हैं। इसके अलावा अमिताभ बच्चन फिल्म 'आरक्षण' में भी अध्यापक का किरदार निभा चुके हैं, जिसमें वह गरीब बच्चों को फ्री में पढ़ाते हैं।

'मोहब्बतें' में वे शाहरूख के साथ शिक्षक बने हैं। मोहब्बतें' में शाहरुख खान ने म्यूजिक टीचर का किरदार निभाया था। इस फिल्म में शाहरुख स्टूडेंट्स को म्यूजिक के साथ प्यार का पाठ भी पढ़ाते दिखे थे। आमिर खान की साल 2007 में आई फिल्म 'तारे जमीं पर' काफी पसंद की गई। इस फिल्म में आमिर खान ने टीचर का किरदार निभाया था। इस फिल्म में आमिर के किरदार का नाम राम शंकर निकुम्भ था। वह एक ऐसे शिक्षक के रोल में नजर आए, जो बच्चे की प्रतिभा को पहचान कर उसे निखारते हैं। हाल ही में आई फिल्म 'सितारे जमीन पर' इसकी अगली कड़ी की फिल्म है।

फिल्मों में शिक्षकों का किरदार निभाने वाले कलाकारों की लिस्ट में अभिनेता बोमन ईरानी भी शामिल हैं। बोमन ईरानी दो फिल्मों में टीचर का किरदार निभा चुके हैं। पहली बार संजय दत्त की सुपरहिट फिल्म 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' में उन्होंने मेडिकल कॉलेज के डीन का किरदार निभाया था। इसके बाद वह आमिर खान की फिल्म 'थ्री इडियट्स' में प्रोफेसर के रोल में नजर आए थे, जिन्हें सब वायरस कहते थे। उनका यह किरदार यादगार बन गया। साल 2019 में आई फिल्म 'सुपर 30' पटना के गणितज्ञ आनंद कुमार पर आधारित है। इस फिल्म में ऋतिक रोशन ने आनंद कुमार का किरदार अदा किया था। फिल्म में दिखाया गया है कि कैसे एक शिक्षक होनहार गरीब बच्चों को इंजीनियर बनाने के लिए हर संभव मेहनत करता है और कामयाब भी होता है।

शाहिद कपूर भी इस लिस्ट में अपनी जगह बनाए हुए हैं। उन्होंने 'पाठशाला' में अध्यापक की भूमिका निभाई थी। उनके साथ टीचर की भूमिका में अभिनेत्री आयशा टाकिया भी नजर आई। फिल्म में शाहिद कपूर बच्चों को पढ़ाई के अलावा अन्य गतिविधियों में भी भाग लेना सिखाते हैं। फिल्म में शिक्षा प्रणाली की कमियों को उजागर किया गया है। स्कूल प्रबंधन की मनमानी के खिलाफ शाहिद कपूर मोर्चा खोल देते हैं।

यदि शिक्षक के रूप में दमदार भूमिका की बात की जाए, तो 'इम्तिहान' के विनोद खन्ना और 'बुलंदी' के राजकुमार बाजी मार ले जाते है। वैसे तो 'सारांश' के बूढ़े शिक्षक के रूप में अनुपम खेर भी खूब जमें। लेकिन, वे शिक्षक से ज्यादा एक असहाय बाप की ज्यादा कहानी कहती है। जितेंद्र 'परिचय' में गुलजार का बाना पहनकर शिक्षक बने तो राजेश खन्ना ने 'रोटी' में पार्ट टाइम शिक्षक और 'मास्टरजी' में नायिकाओं के साथ रोमांस करने का काम ज्यादा किया। प्राण ने भी 'जंगल में मंगल' में मसखरे टीचर की जोकरनुमा भूमिका निभाई थी।

फिल्मी सितारों में केवल नायक नही नायिकाएं भी शामिल हैं, जो शिक्षिका बनी। नरगिस ने 'श्री 420' में शिक्षिका बनकर 'इचक दाना बिचक दाना' गाया तो 'असली नकली' में साधना ने भी ऐसी ही भूमिका की थी, जिसके छात्र देवानंद उन्हीं से इश्क लड़ाते हैं। 2016 में आई फिल्म 'चॉक एन डस्टर' में शबाना आजमी ने मैथ्स की सीनियर टीचर विद्या सावंत की भूमिका निभाई। उन्हें यह कहकर स्कूल से निकाल दिया जाता है कि उनका पढ़ाने का ढंग पुराना हो चुका है, जो आज के एजुकेशन सिस्टम में फिट नहीं बैठता। फिल्म में शबाना आजमी के संघर्ष को बखूबी दिखाया है। वह एक आदर्श शिक्षिका के किरदार में नजर आई हैं।

साल 2018 में आई फिल्म 'हिचकी' में रानी मुखर्जी टीचर की भूमिका में नजर आई थीं। इस फिल्म की कहानी और रानी मुखर्जी का किरदार सभी दर्शकों को खूब पसंद आया। रानी अपनी काबिलियत से पिछड़े हुए बच्चों के अंदर पढ़ाई करके की उम्मीद जगाती हैं और उनके भविष्य को सुधारने का काम करती हैं। सुष्मिता सेन भी इस लिस्ट में शामिल हैं। सुष्मिता ने फिल्म 'मैं हूं ना' में टीचर का किरदार निभाया था, जिसमें वह रोमांटिक किरदार में नजर आई थीं। शाहरुख खान सुष्मिता के छात्र बने थे। दोनों के बीच की केमिस्ट्री में फैंस का दिल जीत लिया था।

अंदर नहीं... अब जमीन पर हैं... गिंडोले!

अधिकार
प्रकाश पुरोहित

कुछ साल पहले तक बारिश से भीगी मिट्टी में संटी से जरा-सा खोदने पर ही गिंडोले (जिन्हें केंचुए भी कहते हैं) निकल आते थे। एकदम शाकाहारी-फलाहारी और निरापद गिंडोले। कुछ भी कर लो, ये कुछ नहीं करते थे। बच्चों को इनसे खेलते हुए, सांप से खेलने का सुख मिलता था। सांप का नाम सुन कर ही जिनकी फूंक निकल जाती थी, वो भी गिंडोले से यूं खेलते थे, जैसे कोई बहादुरी का काम किया हो। कमजोर को सताने का सुख, इन गिंडोलों से खेलते हुए मिलता था। इनकी बहुतायत रहती थी कि बच्चों में इस बात पर झगड़ा नहीं होता था कि 'मेरा ले लिया।' पूरी धरती इनसे भरी हुई थी, खोद कर निकालने वाला चाहिए!

यह भी याद नहीं कि खेलने के बाद इनका क्या किया जाता था, क्योंकि यह तो बिलकुल ही नहीं होता था कि उन्हें फिर से जमीन में दफना दिया जाए। बच्चों के लिए अगर ये खिलौने थे तो बड़ों के लिए या तो घृणा या दया के पात्र होते थे। बच्चों को डांटा जाता- क्यों तंग कर रहे हो या क्या है इनमें खेलने जैसा, कैसे तो भी गिलबिले-से तो हैं। महिलाएं तो इनका जिक्र करते हुए आमतौर पर बुरा-सा मुंह ही बनाती थीं और मुंह पर पल्लू ले लेती थीं।

बगैर हड्डी के होते थे गिंडोले। उन्हें चाहे जैसा आकार दे दो, कुछ नहीं कहते और वैसे ही हो जाते। उस समय तो यह बुरा भी नहीं लगता था कि बगैर हड्डी और चमड़ी के कोई कैसे जिंदा रह सकता है। अलग-अलग साइज के होते थे ये गिंडोले। कुछ तो इतने लंबे भी होते थे कि बच्चे गले में डाल कर शिवजी हो जाया करते थे। जैसे, आजकल बच्चों के हाथों में मोबाइल फोन और टेबलेट होता है ना, ठीक वैसे ही उन दिनों गिंडोले होते थे, खास तौर पर गांव में।

उस समय तक हमें गिंडोले का मतलब भी पता नहीं था। वो तो बाद में जब बड़ों से कहते सुना कि आदमी है या गिंडोला, तो मालूम पड़ा कि ये गरीब कीड़ा किसी को गाली देने के काम भी आ सकता है। आज जब गिंडोले की कल्पना करता हूं तो झुरझुरी-सी आ जाती है। यकीन नहीं होता कि इतने गिलबिले कीड़े से हम खेल कैसे लेते थे। आज तो गिंडोले जैसे मनुष्य से ही नफरत, चिढ़ होने लगती है और उसकी तरफ देखने का भी मन नहीं करता है। तब हम उससे खेल कैसे लेते थे? गिंडोले जैसे इंसान से तो खेल भी नहीं सकते आज। उसकी वजह शायद यही है कि गिंडोले को तो प्रकृति ने ही ऐसा बनाया है, लेकिन इंसान को तो इंसान ही बनाया था, फिर वह गिंडोला कैसे हो गया!

आज स्मार्ट सिटी के दौर में सीमेंट-कांक्रीट के जंगल उग आए हैं, तो मिट्टी अब देखने को भी नहीं मिलती और जब मिट्टी ही नहीं मिलती है, तो फिर बेचारे गिंडोले कहां से पैदा होंगे। गिंडोले जैसे लोग तो कहीं भी पैदा हो सकते हैं, लेकिन गिंडोले को तो खालिस मिट्टी ही चाहिए। गिंडोले अब जमीन में नहीं, यादों में ही बचे हैं और जब भी बारिश का मौसम आता है तो मिट्टी की गंध और गिंडोले याद में आ ही जाते हैं। बच्चे पूछते हैं कि गिंडोले कैसे होते हैं तो मैं बता नहीं पाता हूं। अगर मैं उन इंसानों की तरफ इशारा करूं कि ऐसे होते हैं, तो बच्चे कहेंगे ना कि ये तो इंसान हैं, गिंडोले कैसे हो गए!

एक बगीचे में बेंच पर बैठा अंगूठे से जमीन खुरच रहा था कि तभी कुछ गीला-गीला-सा लगा। देखा, वहां गिंडोला निकल आया था। मैंने पूछ लिया- 'अरे तुम, बहुत दिनों... बरसों बाद दिखे। मुझे तो लगा था कि खत्म ही हो गए।' गिंडोला धीरे-धीरे बोलने लगा- 'अब पहले जैसी बात नहीं रही। बच्चों के साथ खेलते थे तो मन बहल जाता था। ठीक है, थोड़ी ज्यादती करते थे कुछ बच्चे, लेकिन फिर भी उनमें मासूमियत थी, बचपना था। अब तो हमारे हिस्से की मिट्टी तक खा गए इंसान। हम थे तो मिट्टी को उपजाऊ बना देते थे। जहरीली दवा नहीं डालना पड़ती थी। खेत को जलाना नहीं पड़ता था, बांझ नहीं बनाते थे जमीन को हम! हम तो फसल का एक दाना भी नहीं खाते थे। मिट्टी ही हमारा भोजन रहा और उसे ही हम खाद की तरह उगलते रहे, मगर इंसान ने ज्यादा के चक्कर में जमीन और हमें सूली पर चढ़ा दिया। हमारी किसी को जरूरत ही नहीं है। हमारे रहने लायक जगह नहीं छोड़ी है, तो हम कहां बचते।'

'फिर भी कभी बाहर आने का मन होता होगा?' मैंने पूछा।

'क्या करें यहां अब आकर... सच बात कहूं कि अब धरती पर ही इतने गिंडोले नजर आने लगे हैं कि हमारा मन ही नहीं होता है बाहर आने का।' गिंडोले की यह बात मुझे बुरी लगी।

'मुझे तो नजर नहीं आते हैं...?' मैंने पूछा।

'हमारी नजर चाहिए उसके लिए। जब एक गरीब बूढ़े आदमी को भीड़ नोच-नोच कर मार डालती है, तब आपको गिंडोले नजर नहीं आते हैं? ये गिंडोले ही तो हैं, जो भीड़ की शक्ल में किसी भी कमजोर को पीट-पीट कर मार डालते हैं। ये हैं असली गिंडोले... हमारा तो यूं ही नाम बदनाम है। हमने कभी एक चीटी भी नहीं मारी, मगर ये इंसान अकेले में तो गिंडोले ही रहते हैं, लेकिन जब भीड़ बन जाते हैं, तो किसी की भी जान ले लेते हैं। इस तरह ये यह बताने की कोशिश करते हैं कि हम गिंडोले नहीं हैं। इन्हें देख कर हमें शर्म आती है कि इनकी वजह से हमारा नाम खराब हुआ है। मॉब लिंचिंग के जरिए खुद को मर्द बताने वालों से बड़ा गिंडोला कोई नहीं है। बस, इसीलिए हम अब नजर नहीं आते हैं कि इन्हें भले ही मनुष्य होने का भान ना हो, लेकिन हमें तो अपने गिंडोलेपन पर नाज है। इन्हें इज्जत प्यारी भले ही ना हो, हमें तो अपना नाम प्यारा है।'

कहते हुए गिंडोला ना जाने कहां अंतर्ध्यान हो गया। क्या सही में गिंडोला वहां आया था या मैं ही कोरी गप्प लगा रहा था, दूर-दूर तक गिंडोला कहीं नहीं था।

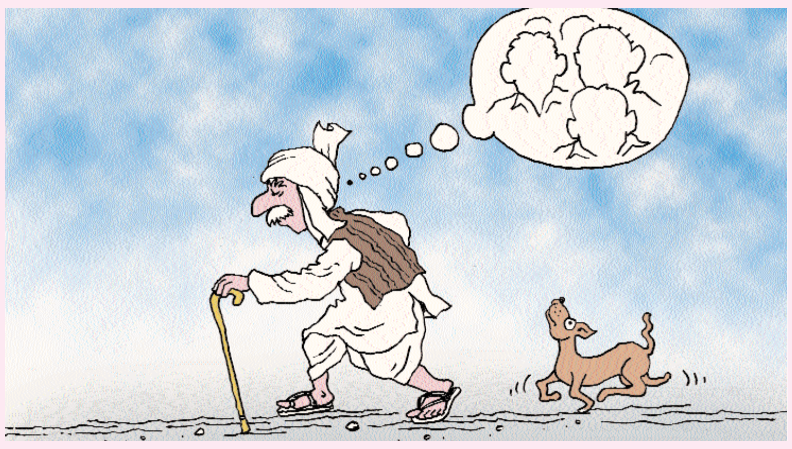

उम्रदराज़ होती दो सहेलियों की गुफ्तगू

...और क्या कह रही है जिंदगी
ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

एक है मानने को तैयार नहीं कि वो उम्रदराज़ हो रही है। उनका नाम मीता है दूसरी सहेली ममता है जो घड़ी घड़ी अपनी बातों/लेखों में बताती है कि वो उम्रदराज़ हो रही है। उसे ये 'नहीं' करना चाहिये। वो नहीं पहनना चाहिये। ये नहीं खाना, उससे बात नहीं करना अर्थात् वो 'लोग क्या कहेंगे' की दुविधा पर भीतर ही भीतर मन का सुनना चाहती है।

ममता- बदल रही हूँ। मुझे बदलने का शौक नहीं/ पर अपने आप बदल रही हूं।

मीता- ''क्यों बदल रही हो सखी? जैसी हो वैसी ही रहना। दूसरों के लिये क्यों खुद को बदलना

ममता- चुनती हूँ लंबा सरल रास्ता/ पथरीला शार्ट कट नहीं ले रही।

मीता- रास्तों से क्यों घबरा रही हो/ मंज़िल भी हम है और रास्ते भी हम।

ममता- बोलने से पहले सोच रही हूँ/ भीतर दनादन बोल रही हूं।

मीता- सोच सोच कर बोलने में क्या रक्खा है/अभी अभी तो आज़ादी का स्वाद चखा है।

ममता- बोलते बोलते भूल जाती हूँ/ सो बातों को कई बार दुहराती हूं।

मीता- क्या हुआ जो बार बार दोहरराती हो बातों को? दोहराने से ही तो सबक याद हुआ था बचपन में।

ममता- कोई कपड़ा सही नहीं बैठता बदन पे/ ये पहनूँ या वो/ कपड़ों के ढेर लगा रही हूं और हेल्पर को बांटे जा रही हूं।

मीता- जो चाहे वो पहनो/सोचो सब जंचता है तुम पे/ अभी तो तुमने सेकंड इनिंग में कदम रखा है।

ममता- घूमने को जी करता है बहुत/ पहाड़ों पे जाने को कतरा रही हूं।

मीता- पहाड़ो की ऊँचाईयों से क्या घबराना? तुमने जिंदगी में

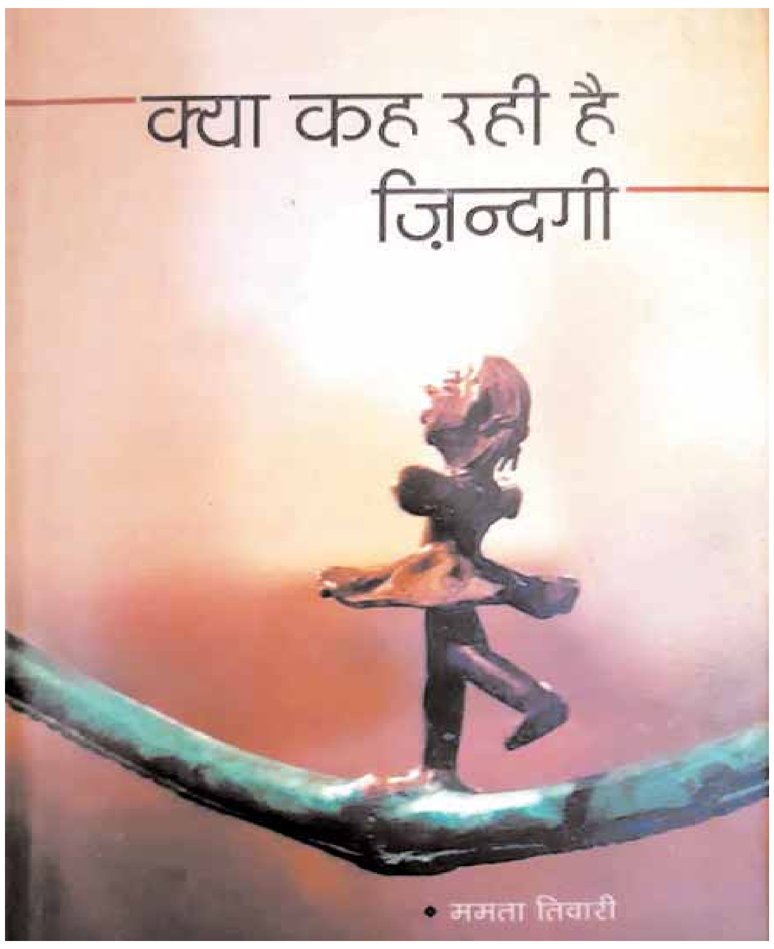

गहराईयाँ पार की हैं। फिर बर्फीले पहाडों से कैसा डर? ये सपना देखकर ही तो तुम बड़ी हुई हो।

ममता- थोड़ी आधुनिक वेशभूषा या बाल अपनाऊं/ या पुराने ढर्रे में ही रूक जाऊं? (हालांकि जी करता है कुछ बदलूं)

मीता- जो चाहे स्टाइल करो/ मन का पहनने ओढने से ना डरो/ शर्मिंदा होने की ज़रूरत नहीं/ आइने में खुद पे ही मरो।

ममता-कभी कभी छुप के वाइन लेती थी/अब पार्टियो से कतरा रही हूं।

मीता- ज़माने की किस किस बात पे डरो/ अपने आप अपना प्याला करो/ कोई तिश्नगी ना रहे बाकी/ खुल के मौज करो/

ममता- क्या क्या बदलाव आया चेहरे पे/ आईना देख सोचा करती हूं।

मीता- आइने को अपना सच्चा दोस्त बनाना/ अपने आपको खूबसूरत समझना/

ममता- कभी कभी कोई अच्छा लगता है/ लोगों की सोच बात करते दिल डरता है।

मीता- लोगों से बात करना, कब से गुनाह हो गया? अब तुम सुलझी परिपक्व स्त्री हो। ज़माने से क्यों डरना? इस उम्र में कोई तुम्हें पसंद करे तो क्या हर्ज? इस उम्र में तुम किसी को चाहो तो क्या बुरा?

ममता- क्या इस उम्र में दोस्ती ठीक होगी? कदम बढ़ा के हटा रही हूं।

मीता- दोस्ती के लिये हाथ बढ़ाये जाते है/ कदमों को क्या पीछे हटाना? ये नये दौर को ज़माना है, नई नई चीज़े आजमाना।

ममता- 'लोग क्या कहेंगे' बार-बार सोच/ अकेले सिनेमा नाटक देखने जाने से घबरा रही हूं।

मीता- लोग हैं तो बातें तो होगी ही/ बातों के डर से जीना कैसे छोड़ दें? ये सोच उनकी है भई/ हम अपना रास्ता क्यों मोड़ दें?

ममता- वो चाहे ना चाहे हमें/ रिश्तों की खातिर उन्हें/ चाहे जा रही हूं।

मीता- जबर्रदस्ती ख़ुद को क्यों बांधती हो झूठे रिश्तों में? कभी नये ख़्वाब बुनो/ अपने रिश्ते खुद चुनो।

ममता- अंदर से घबराई जा रही हूं/ बाहर से मुस्कुरायें जा रही हूं।

मीता- अंदर बाहर सब तरफ से मुस्कुराओ/ तोड़ के सारे बंधन आसमां में उड़ जाओ।

मुझे नहीं मालूम आपका दिल और क्या चाहता है? मैंने तो अपने पंख तौल लिये। उड़ने के लिये अनंत आकाश है और आपसे पूछ रही हूं, सुबह सवेरे और क्या कह रही है जिंदगी?

गोवा में लहरों पर तैरती झांकियों का 'सांगड़ोत्सव'

प्रसंग/अनंत चौदस
संदीप राशिनकर

गणेश चतुर्थी से लेकर अनंत चौदस तक का समय जनमानस को एक विशिष्ट अनुभूति से सराबोर करता है। इष्ट की स्थापना, पूजा व विभिन्न कार्यक्रमों का अनवरत सिलसिला अनंत चौदस तक आते-आते जनमानस को उल्लास के चरमोत्कर्ष पर ले आता है। अनंत चौदस पर निकलने वाली झांकियों के प्रति लोगों के अद्भुत आकर्षण को रास्तों पर उमड़ती भीड़ से समझा जा सकता है। विद्युत रोशनाई में नहाई ट्रकों - ट्रॉलियों पर निकलती झांकियों के चल समारोह को उत्सुकता से निहारते जन समुदाय के लिए यह कल्पना कितनी रोमांचक व सुखद हो सकती है कि रास्ते , नदी में तब्दील हो जाएं और झांकियों को ढोते ट्रक ट्रॉलियां नावों में बदलती हुई पानी की लहरों पर तैरने लग जाएं ...!

महाराष्ट्र व गोआ के साथ-साथ मालवांचल के लिए गणेशोत्सव का पर्व वर्षों से आस्था , उत्साह व आकर्षण का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है । गणेश चतुर्थी से लेकर अनंत चौदस तक का समय जनमानस को एक विशिष्ट अनुभूति से सराबोर करता है।

इष्ट की स्थापना, पूजा व विभिन्न कार्यक्रमों का अनवरत सिलसिला अनंत चौदस तक आते- आते जनमानस को उल्लास के चरमोत्कर्ष पर ले आता है। अनंत चौदस पर निकलने वाली झांकियों के प्रति लोगों के अद्भुत आकर्षण को रास्तों पर उमड़ती भीड़ से समझा जा सकता है। विद्युत रोशनाई में नहाई ट्रकों - ट्रॉलियों पर निकलती झांकियों के चल समारोह को उत्सुकता से निहारते जन समुदाय के लिए यह कल्पना कितनी रोमांचक व सुखद हो सकती है कि रास्ते , नदी में तब्दील हो जाएं और झांकियों को ढोते ट्रक ट्रॉलियां नावों में बदलती हुई पानी की लहरों पर तैरने लग जाएं ...!

यह कोई कल्पना या सपना नहीं है। इस सुखद अनुभूति का साक्षात्कार कराता है परंपरागत तरीके से मनाया जाने वाला गोआ का अद्भुत पर्व ' सांगडोत्सव ' ! इसमें

गोआ की मांडवी नदी की कुंभारजुवे और मॉशेल स्थित खाड़ियों में सुसज्जित, रंग - बिरंगी तैरती झांकियों का चल समारोह एक अलहदा आनंद से सराबोर कर जाता है। दो नावों को एक साथ जोड़कर बनाया जाता है एक सुसज्जित ' सांगड '। कुम्भारजुवे के शांता दुर्गा मंदिर में स्थापित श्री गणेश को इस पर विराजित किया जाता है। फिर शुरू होता है श्री गणेश की नावों पर विराजित इस झांकी का नौकायन ! इसी की अगुवाई में ग्रामीणों द्वारा नावों पर बनाई गई अनेक आकर्षक झांकियां सम्मिलित होती हुई पानी पर तैरते इस समारोह को वृहदता व विविधता प्रदान करती है ।

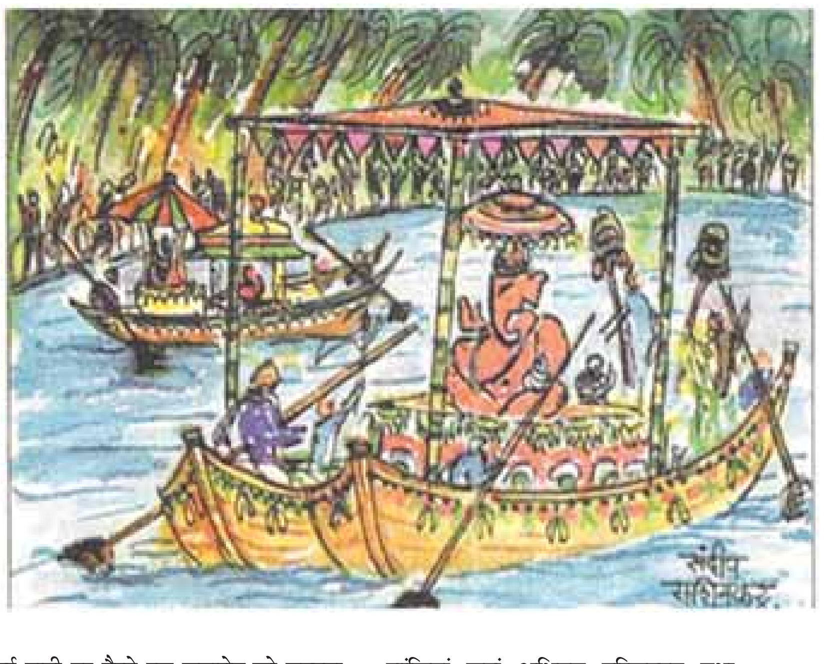

सांगडोत्सव में लहरों पर तैरती , हिचकोले खाती झांकियों की विषयवस्तु में जहां पौराणिक कथाओं, आख्यायिकाओं तथा संस्कारों की महक है , वहीं सामयिक घटनाक्रमों , वर्तमान परिवेश तथा सरोकारों का साक्षात्कार भी है। सांगडोत्सव की झांकियां जहां अभिनव परिकल्पन तथा कलात्मकता से दर्शकों को अचंभित करती है , वहीं पानी पर तैरती झांकियों का यह अनूठा दृश्य उन्हें अवर्णनीय आनंद से सराबोर भी करता है। नदी के दोनों किनारों तथा मॉशेल के पुल पर एकत्रित भारी जनसमुदाय सांगड़ोत्सव की महत्ता और उसकी लोकप्रियता का जीता - जागता प्रमाण है।

गोआ आने वाले पर्यटकों के लिए भी यह उत्सव तेजी से आकर्षण का केंद्र बनता जा रहा है। विभिन्न संगठनों , शौकिया कलाकारों तथा संस्थाओं की बढ़ती रुचि , तथा उत्सव में निहित श्रद्धा के साथ साथ पुरस्कारों का आकर्षण इस उत्सव की लोकप्रियता में वृद्धि कर रहा है। कल्पनाशीलता तथा कलागत कौशल की बढ़ती प्रतिभागिता ने इस उत्सव की महत्ता को नए आयाम दिए है।

अपराह्न तीन बजे से शुरू होने वाले इस उत्सव में कुंभारजुवे के शांता दुर्गा मंदिर में प्रतिष्ठित गणेश मूर्ति के पूजन के बाद उसे लाल रंगों में सजाकर ढोल ढ़माकों और पटाखों की उत्साही ध्वनि के साथ समारोहपूर्वक नदी पर लाया जाता है। फिर उसे विशेष रूप से सुसज्जित सांगड पर आरूढ़ कराने के साथ शुरू होता है श्री गणेश का नौका विहार ।नौकायन द्वारा नदी में सात चक्कर लगाने के बाद विसर्जित होती गणेश प्रतिमाओं के साथ गूंज उठता है

' गणपति बप्पा मोरया , पुढच्या वर्षी लवकर या ' का उदघोष !!

'ये देश है तेरा... परदेस है तेरा!'

❐ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

गणपति को अगले बरस फिर आने का न्यौता देकर विदा कर दिया है और सोशल मीडिया पर धूमधाम विदाई के ढेरों वीडियो हैं। कुछ वीडियो देखकर दिमाग चकरा गया, क्योंकि यह वीडियो लंदन, स्कॉटलैंड और एम्स्टर्डम के थे। जुलूस निकाले जा रहे हैं, ढोल बज रहे हैं और पीछे की बिल्डिंग्स न देखें तो बताना नामुमकिन कि भारत या यूरोप का। आम तौर पर यूके के कुछ इलाकों में खास तरीके से ही विसर्जन की इजाजत है और अभी तक यह बात साफ नहीं हुई है कि इनमें से कितने गैर-कानूनी हैं। साफ है कि धर्म का जोरदार हुंकारा लगाने की होड़ में भूल गए कि भारत और यूके के सिस्टम में फर्क है। यहां की पुलिस तुरंत तमाचा नहीं मारती, डंडे नहीं बरसाती, लेकिन बाद में इनसे पार पाना आसान नहीं है।

करीब दस-पंद्रह दिन पहले की खबर है कि लंदन के भारतीय इलाकों में वहां की लोकल कॉउंसिल (नगर निगम) पोस्टर लगा रही है कि पान थूकना मना है और पकड़े जाने पर जुर्माना देना होगा। महीना भी नहीं बीता है कि भारतीयों ने पूरे देश भर में खास जगह पर भारत का झंडा लहराया, क्योंकि आजादी का दिन था। लंदन के ट्रफाल्गर स्क्वेयर में बारह अक्टूबर को दीवाली मनाई जाएगी। सेंट्रल लंदन का इलाका है, जहां डीडीएलजे में अमरीश पुरी कबूतरों को दाना डालते दिखाई देते हैं। इतना ही नहीं, छठ पूजा के लिए तैयारियां हैं। इस देश में पब्लिक पार्क की कमी नहीं है और इसी का फायदा ऐसे धार्मिक त्यौहार के लिए होता है। सरकार भी नियम-कायदे के दायरे में रह कर हर त्यौहार की इजाजत देती है। सिर्फ अपने ही धर्म और रिवायतों को तवज्जो देना कहां की सभ्यता है! गणपति विसर्जन की जिस रिवायत को यूके में पूरा किया जा रहा है, क्या यही बात भारत की नदियों, तालाबों और समंदर में गणपति विसर्जन के समय बदलने की बात नहीं हो रही है? हर साल खंडित मूर्तियों के फोटो आते हैं, बताया जाता है कि पानी में जहर कितना बढ़ गया है,

लेकिन भारत में कोई खास सुधार नहीं हो रहा है।

कहने को भारत धर्मनिरपेक्ष देश है, लेकिन भारत में ही हम देखते हैं कि ईस्टर की सर्विस हो या जुम्मे की नमाज, हर बात पर नेताओं को धर्म खतरे में नजर आता है। जिस देश में ज्यादातर हिंदू धर्म को मानने वाले हैं, वहां ईसाई और मुस्लिम समाज को त्यौहार मनाने पर पाबंदी है, लेकिन जिस देश में ईसाई ज्यादा हैं (वैसे यूके में ज्यादातर लोग धर्म नहीं मानते) वहां के नियम-कायदे तोड़ते हुए त्यौहार मनाना कितना सही है?

भारत में पटाखे छोड़ना हों या होली के रंग की बात हो या गणपति विसर्जन की, हर बात पर रीति-रिवाज की दुहाई दी जाती है और दूसरे धर्म के रिवाज की कोई मान्यता नहीं है। जो देश इस सभ्यता का उद्गम है, वहीं हर धर्म का सम्मान नहीं है तो दूसरे देश में यूं होहल्ला मचा कर क्या साबित करने की कोशिश हैं? जो लंदन में उधम मचा रहे हैं, क्या उन्हें भारत के किसी भी शहर में विदेशियों का इस तरह से दिखावा करना मंजूर होगा? 'जागो हिंदू जागो' का नारा लगाने वालों को 'वसुधैव कुटुंबकम्' याद करने की ज़रुरत है।